शंकर

छात्र-छात्री

भारतभूषण अग्रवाल

मूल्य : चार रुपये

आवरण : सुकुमार चटर्जी

○ ○

प्रथम संस्करण, १९६९

○ ○

प्रकाशक

नेशनल पब्लिशिंग हाउस

२/३५, अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-६

मुद्रक : रूपक प्रिंटर्स, दिल्ली-३२

पितृबन्धु श्री गिरीन्द्रनाथ वसु को
श्रद्धापूर्वक

—पिताजी के निधन के वाद,
वचपन से लेकर आज तक
जो मेरे सुख में सुख और
दुःख में दुःख पाते आये है।

व्यंग्य और विद्रूप व्यक्तिगत रूप से
मुझे तनिक भी नहीं भाते। लेकिन
स्वास्थ्य-रक्षा के लिए बीच-बीच में
इच्छा के विरुद्ध होने पर भी नीम की
पत्तियां खानी पड़ती हैं। इस पुस्तक
के कुछेक चरित्रों के माध्यम से
मैंने 'मानसिक' नीम की पत्तियां
भक्षण करने की चेष्टा की है।

—शंकर

में कोई आपत्ति नहीं।' पर हमें इसमें प्रवल आपत्ति है। इन 'दो जनों' को मैं जितना जानता हूं, उससे मैं खूब जोर देकर कह सकता हूं कि ये सस्ते नहीं हैं—ट्राम और वस के टिकट की तरह ही ये 'नॉट ट्रान्स्फरेवल' हैं।

इन उखड़े-उखड़े उत्तरों से मेरी पनायन-वृत्ति का परिचय पाकर जो धैर्यहीन पाठक ऊवे जा रहे हैं उनकी सेवा में मेरा निवेदन है—'कृपया लाल आँखें न दिखाएं! इस किताव में जिनकी जीवनी विवेचित होने वाली है उनमें से कोई भी कभी लाल आँखों के सामने नरम नहीं पड़ा। सफाई में एक और बात भी कह सकता हूं: पात्र-पात्री का जिक्र आते ही अमुक तिथि तदनुसार अमुक तारीख को सपरिवार पधार-कर वर-वधू को आशीर्वाद देने का न्यौता देना पड़े, ऐसा कोई कानून या आर्डिनेन्स नहीं है। शादी के वर-वधु के अलावा भी तो कई तरह के पात्र-पात्री हो सकते हैं, जैसे—नाटक के पात्र-पात्री, कहानी के पात्र-पात्री, उपन्यास के पात्र-पात्री।

जी हाँ, ऊब तो आप गए ही हैं, इसलिए भूल के लिए क्षमा-याचना न करके कहता हूं—यहां 'पात्र-पात्री' नामक इस किताव के पात्र-पात्री का जिक्र हो रहा है।

पहले पात्र का उपाख्यान। कारण यह है कि साहित्य के साथ हमारे इस पात्र का सम्पर्क घनिष्ठ है। देश के साहित्य का भविष्य जब उन्हीं पर निर्भर है तब उपन्यासकार को उनसे ही श्रीगणेश करना पड़ेगा।

इसमें सन्देह नहीं कि मेजर बी० एन० बराट का नाम सुनते ही आप उन्हें पहचान लेंगे। उनके बारे में जिसने कुछ भी न सुना हो ऐसा शिक्षित जन हमारे देश में एक भी नहीं। उनकी तसवीर भी इस बीच बहुजन घरों में शोभा पा चुकी है। लेकिन आत्म-प्रचार उन्हें तनिक भी पसन्द नहीं।

उनके न चाहते हुए भी अगणित भक्तों और शुभाकांक्षी ठेकेदारों के उत्साह से पिछले कुछ दिनों में उनकी बहुत-सी फ्रेमों में मढ़ी तसवीरें देश के घर-घर में टंग सकती थीं अगर मिसेज दास साक्षात राहु की भांति उनके भाग्य-गगन में आविर्भूता न हो जाती। किस अशुभ घड़ी में मिसेज दास से उनका परिचय हुआ था यह मेजर बराट खास भी नहीं समझ पाते। उनके अतीत को मिसेज दास ने तोड़-मरोड़

कर चूर-चूर कर दिया है। वर्तमान भी उनकी अपनी आंखों के सामने जल-फुँककर राख बनता जा रहा है।

बहुत दिनों से जन्म-कुंडली की जांच नहीं कराई है। एक बार पालु भट्टाचार्य भृगुशास्त्री महाशय की शरण लेनी होगी। मिसेज दास फिर विमान द्वारा राजधानी जा रही हैं। माननीय मन्त्री से उनकी भेंट होगी। वहां वह उनसे क्या लगा आएं कौन जाने! तिस पर मिसेज दास की इस बातचीत पर ही बराट-सूर्य का उदय-अस्त निर्भर करता है।

मेजर बराट का भविष्य सचमुच अब उतना उज्ज्वल नहीं मालूम पड़ता—शायद इस बार मिसेज दास खुद उप-मन्त्री बन बैठेंगी। पतन नाम का शब्द तो उनकी डिक्शनरी में ही नहीं है। वह समाज-सेविका जो ठहरीं! इतिहास का प्रश्रय पाकर सफलता की नसैनी पर एक-एक सीढ़ी चढ़ती हुई वह ऊपर पहुंच जाएंगी। उन्हें आजीवन देश के कोटि-कोटि मनुष्यों की श्रद्धा और प्रीति मिलेगी। उनकी कुंडली में किस-किस ग्रह का प्रभाव है एक बार यह देखने का लोभ है।

डी० जी० (लिट०) मेजर बराट ऑफिस के एयर-कण्डीशण्ड कमरे में बैठे-बैठे पिछले दिनों की बात सोच रहे थे। उस बार जब राजधानी से ट्रंक-काल आया था तब वह चाहते तो देवलीन भद्र का नाम दे सकते थे। मिस भद्र नें भी उस बार उनके पक्ष में भाषण दिया था। अखबार में रिपोर्ट देने के लिए भी तैयार थीं। लेकिन उस समय

मिनति दास के अलावा मेजर बराट को और कोई नाम याद ही नहीं आया।

ये बातें उस ऐतिहासिक पहली अप्रैल के बहुत पहले की हैं। मेजर बराट काम के ऐसे दबाव में भी अतीत की उस स्मरणीय तारीख की बात सोच रहे थे जिस दिन संसद में साहित्य के राष्ट्रीयकरण का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ था।

संसद-सदस्य उस समय नाना प्रकार की एकरस रुटीन चर्चाओं के कारण ऊंघने लगे थे। बहुत-से तो सभा में उपस्थित भी न थे। ठीक उसी समय ४४० वोल्ट का इलेक्ट्रिक शाक देते हुए घोषणा की गई—कहानी, उपन्यास, उपन्यासोपम गल्प, रम्य-रचना इत्यादि का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया है। सरकारी अधीनता में डायरेक्टर जन-रल (लिटरेचर) को राष्ट्रीयकृत साहित्य-शिल्प का सम्पूर्ण भार सौंप दिया गया है। अब से देश में सरकार के अलावा और कोई व्यक्ति गल्प का सृजन, मुद्रण या प्रकाशन न कर सकेगा। उसी दिन प्रकाशित साढ़े सात सौ पन्नों के एक विशेष गजट में सरकारी आदेश का सम्पूर्ण विवरण निकला था।

पुराने अखबारों की बहुत-सी कतरनें बराट साहब की बगल में रखे लम्बे चमड़े की जिल्द वाले रजिस्टर में चिपकी हुई हैं। आज अचानक उस रजिस्टर को उलटकर देखने की उनकी इच्छा हुई। उसमें लिखा था—

वामपन्थी सदस्य श्रीमती वाणी बालखादार के एक प्रश्न के उत्तर में उद्योग-मन्त्री ने बताया कि राष्ट्रीय प्रगति के

लिए साहित्य-शिल्प के राष्ट्रीयकरण की विशेष आवश्यकता आ पड़ी थी। और एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने गैरसरकारी साहित्य के सम्बन्ध में निम्नांकित अभियोगों के प्रति माननीय सदस्यों का ध्यान आकर्षित किया : (क) गल्प साहित्य की क्रमिक अवनति, (ख) विदेशी कथानकों पर क्रमशः बढ़ती निर्भरता के कारण मुद्रा में भारी कमी, (ग) राष्ट्रीय उन्नयन के प्रति लेखकों की निराशाजनक उपेक्षा।

"उद्योग-मन्त्री ने प्रतिष्ठित लेखकों के एकाधिकार से पाठकों की रक्षा करने पर और जनसाधारण के नैतिक स्वास्थ्य के विकास के लिए श्रेष्ठ साहित्य के उत्पादन पर भी जोर दिया। स्वतन्त्र सदस्य श्री गजानन पांडे के प्रश्न के उत्तर में गृहमन्त्री ने कहा कि साहित्य के राष्ट्रीयकरण से संस्कृति-मन्त्रालय का कोई सम्बन्ध नहीं है। यह बात सही है कि कुटीर-उद्योग के आफिस ने भी साहित्य के सम्बन्ध में आग्रह प्रकट किया था, लेकिन साहित्य अब कुटीर-उद्योग नहीं है। वह अपने देश के भारी उद्योगों में है।"

"तालियों की गड़गड़ाहट के बीच मिनिस्टर फॉर हैवी इन्डस्ट्रीज ने घोषणा की कि नए दफ़्तर में पूरे समय के लिए नियुक्त कर्मचारीगण साहित्य की सृष्टि करेंगे। फलस्वरूप राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि सुनिश्चित है। सुपरिचित वाम-पन्थी सदस्य श्री सुधांशु पालित ने बेकार हो जाने वाले लेखकों के लिए हर्जाने की मांग की और स्पीकर के मना

करने पर भी बारम्बार टेबिल ठोक-ठोककर उनकी दृष्टि आकर्षित करने का प्रयत्न किया। अन्त में वे अपने अशोभन आचरण के लिए अध्यक्ष द्वारा सभा-कक्ष से वहिष्कृत कर दिए गए। इस पर तीव्र प्रतिवाद प्रकट करते हुए उनके दल के अन्य सदस्यों ने भी श्री पालित का अनुसरण किया। बहस के अन्त में उद्योग-मन्त्री ने बताया कि डी० जी० (लिट्०) के अतिरिक्त यदि और कोई भी जन पुस्तकों की रचना, प्रकाशन अथवा बिक्री करेगा तो उसे पांच हजार रुपया जुर्माना और पांच वर्ष के कारावास की सजा होगी। जुर्माना अदा न करने पर तीन वर्ष का अतिरिक्त कारा-दण्ड दिया जा सकेगा। अपने पास अनधिकृत ग्रन्थ रखने के लिए भी इसी के अनुसार सजा दी जाएगी।"

शुरु में सम्पादकों और जनमत के अन्य पंडितों की राय सरकार के अनुकूल नहीं रही। उनका विरोध शायद और भी जोर पकड़ लेता, लेकिन मिसेज मिनति दास संकट की इस घड़ी में मेजर वराट के लिए संकट-मोचन सिद्ध हुईं। सरकार के प्रथम डायरेक्टर जनरल (लिटरेचर) मेजर विश्वनाथ वराट ट्रंक टेलीफोन पर माननीय मन्त्री का गुप्त आदेश पाकर स्वयं ही मिसेज दास के घर गए थे।

समाज-सेविका मिसेज दास उस समय बालक-बालि-काओं के नैतिक अध:पतन से सम्बन्धित निरोध-कमेटी की अध्यक्षता कर रही थीं। इसके पहले मेजर वराट ने बहुत बार उनका नाम सुना था, लेकिन मिनति दास को अपनी आँखों देखने का यह उनका पहला ही अवसर था। औसत

भारतीय औरत से वह कम-से-कम एक फुट ऊँची थीं। चेहरा कुछ भारी था, लेकिन लम्बाई के कारण खप जाता था। 'हू ईज हू' में उम्र बत्तीस साल लिखी है। दुष्ट लोग उसमें बीस और जोड़ देने की गुपचुप सलाह देते हैं।

लगता है मिसेज दास ने कुछ ही पहले स्नान किया था और स्नानघर से निकलकर उदार हाथ से अपने ऊपर पाउडर और सेंट की वर्षा की थी। चिरकुमार मेजर बराट इस प्रथम दर्शन से अवाक हो गए थे। लेकिन बाद में उन्होंने जाना कि मिसेज दास एक विख्यात कम्पनी की चाय की भाँति अपने आपको सर्वदा ताजा रखती हैं। दो-दो घंटे बाद देश-सेवा में उत्सर्गित अपनी देह पर उन्हें प्रसाधनों का प्रयोग करना पड़ता है। लेकिन पोशाक में तड़क-भड़क नहीं है। सफेद साड़ी पहनती हैं। साथ में बिना बाँह का ब्लाउज! मिसेज दास निश्चय ही कभी बहुत गोरी रही होंगी। अब भी मेक-अप फाउण्डेशन की कृपा से बहुत मैली नहीं हुई हैं। आँखों पर सोने के फ्रेम का चश्मा है।

मेजर बराट को भीतरी कमरे में ले जाकर मिसेज दास चर्चा करने लगीं। मन्त्रियों के नाम के साथ 'दा' जोड़-जोड़ कर उन्होंने प्रश्न किए—"अमुकदा कैसे हैं? अमुकदा क्या कर रहे हैं? और मिसेज लाल! लीला ने, सुनती हूँ, कैबिनेट ज्वाइन की है! और यही लीला कॉलेज डिबेट बोलते समय फेण्ट हो गई थी। मुझसे एक साल जूनियर थी। हर वक्त 'मिनति दी,' 'मिनति दी' की रट लगाए रहती थी।"

मेजर बराट चुपचाप बैठे थे। मिसेज दास ने हँसते-

हँसते कहा—"सरकारी कर्मचारी होने के नाते अपने विचार प्रकट करने में डर रहे हैं क्या? आप मेरा इतना विश्वास कर सकते हैं! मैं कोई ट्रंक-काल करके अमुकदा से आपकी रिपोर्ट नहीं करूँगी।"

मिसेज दास के भड़भड़िया अन्दाज से मेजर बराट उस दिन सचमुच भौंचक हो गए। गवर्नमेन्ट सर्वेण्ट होने के नाते वह दुनियाभर में हर जगह जाने को प्रस्तुत हैं, किसी भी तरह की समस्या से नज़र मिलाने में उन्हें जरा भी भय नहीं लगता, लेकिन देश-सेवकों या समाज-सेविकाओं का नाम सुनते ही उन्हें पसीना छूटने लगता है। ऊँचे अफसरों की अवज्ञा करने, उन्हें कोई ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा मानने और कमरे के बाहर बैठाए रखने में ये देश-सेवक नेता क्या आनन्द पाते हैं, यह वे ही जाने। मिसेज दास के पास आना भी मेजर को अच्छा नहीं लगा था। लेकिन आकर देखा कि वह दूसरी तरह की हैं। स्लिप भेजने के बाद जब वह कमरे में घुसे तब मिनति दास कुछ गम्भीर थीं। लेकिन मेजर बराट से निगाहें मिलते ही उनका चेहरा दन्तमंजन का विज्ञापन बन गया था।

जवाब में मेजर बराट भी मुसकराए थे। मिसेज दास बोलीं—"आप स्मोक करते हैं क्या? तो फिर मुझे सम्मान दिखाकर कष्ट न पाएँ। सुनती हूँ लीला अपने सामने किसी भी अफसर को स्मोक करने की परमीशन नहीं देती। और यकीन कीजिए, यही लीला लुक-छिपकर सिगरेट पीने के कारण पकड़ी गई थी। अगर मैं न बचा लेती तो उसे

हॉस्टल छोड़ देना पड़ता।"

मेजर बराटने सिगरेट सुलगाते हुए मिसेज दास का धन्यवाद किया। वैनिटी बैग से रूमाल निकालती-निकालती मिसेज दास बोलीं—"अमुकदा ने आपके बारे में मुझे पहले ही बता दिया है। इनफैक्ट, आपको जिम्मेदारी सौंपने के पहले मुझसे मेरी राय माँगी थी। नया काम है; बड़ी कड़ी जिम्मेदारी है। एक नवजात शिशु के लालन-पालन का भार है।"

मातृत्व की तुलना मिसेज मिनति दास को बहुत ही प्रिय है। अपनी रचनाओं और वक्तृताओं में वह अकसर इसका प्रयोग करती हैं। यद्यपि उन्हें सन्तान-धारण करने का ज्ञान नहीं है। सुयोग तो था। श्री दास ने अनेक बार आग्रह भी प्रकट किया था। लेकिन समय न था। औरतें जिस समय बहू बनकर गृहस्थी चलाती हैं, बच्चों को बड़ा करती हैं उस समय मिसेज दास योगिनी बनकर देश को बड़ा करने की चेष्टा कर रही थीं। यह ठीक है कि मिस्टर बंकिम दास ने कभी भी उनके काम में बाधा नहीं दी, बल्कि गर्व ही करते रहे। कहते थे—"कवि गुरु ने मिनति को लिखा है: एक तुम्हीं को देखा है, जिसके सामने देश गृहस्थी से भी अधिक प्रिय है। औरतों में ऐसा बहुत कम दिखाई देता है।"

मिसेज दास ने उस दिन मेजर बराट से कहा—"भला इसमें मुझे क्यों लपेटते हैं। जितनी भी अप्रिय बातें हैं क्या सब मुझी को कहनी होंगी। हाल ही में तो सिनेमा की

अश्लीलता को लेकर भाग-दौड़ करती रही हूं। पतिता-उद्धार सोसायटी का भी सारा काम है। मैं क्या-क्या करूं! तिस पर एक स्टैनो तक नहीं।"

मेजर बराट बोले—"आप हर वक्त मेरे स्टैनों का उपयोग कर सकती हैं। मैं रोज सवेरे फोन करके पता करता रहूँगा।"

मिसेज दास मेजर बराट के विशाल गोरे चेहरे और घनी मूँछों की ओर ताक रही थीं। हँसकर बोलीं—"नहीं-नहीं, हज़ार हो, मैं स्त्री हूं। आप लोगों का कष्ट समझती हूं। इतनी बड़ी संस्था चलाने के लिए आपको कितना परिश्रम करना पड़ रहा है, यह क्या मैं नहीं समझती?"

इस सहानुभूति से मेजर बराट का चित्त प्रसन्न हो उठा। इस महीयसी महिला को मन ही मन बारम्बार नमस्कार किया, और सोचा: ऐसी ही नारियों के कारण देश-माता को रत्न-गर्भा कहा जाता है।

मिसेज दास ने विदा देने के समय कहा—"अच्छा, आप चिन्ता न करें। एक बात और—शरीर का ख़याल रखें। देह की उपेक्षा करके मिस्टर दास की भाँति अपना अन्त न बुला बैठें। चाहते तो वह आज भी हमारे बीच रह सकते थे। मेरे स्वामी होने के नाते उन्हें अभी तक म्यूनि-सिपल ऑफिस में किरानीगिरी न करनी पड़ती। लीला के पति को ही देख लीजिए न! पहले तो प्राइमरी स्कूल का टीचर था। और अब?"

मेजर बराट को विदा देने के लिए आंचल सँभालती-

सँभालती मिनति दास दरवाजे तक आ गई थीं। सलज्ज-भाव से मुसकराई भी थीं। और उस मुसकराहट में मेजर वराट को मानो जूही फूलों की मीठी गंध मिली थी।

मिसेज दास ने अपनी बात पूरी कर दी थी। अगले ही दिन अखबार में निकला—"राष्ट्रीय पाठिका-समिति की स्थायी सभानेत्री श्रीमती मिनति दास ने एक विज्ञप्ति में गल्प के राष्ट्रीयकरण के क्रान्तिकारी प्रस्ताव के लिए सरकार का अभिनन्दन किया है। श्रीमती दास ने कहा है : जो चीज़ इतने दिनों में मुट्ठी भर पूंजीपति लेखकों की मुट्ठी में वन्द थी वह अब देश के प्रत्येक नागरिक की सम्पत्ति हो गई है। ईश्वर ने सव मनुष्यों को समान रूप में पैदा किया है। सरस्वती के मन्दिर में द्विजों और तथाकथित अछूतों का जो भेदाभेद चल रहा था वह इतने दिनों वाद अब दूर हुआ।"

मेजर वराट ने अगले दिन सबेरे ही टेलीफोन पर मिसेज दास का धन्यवाद प्रकट किया—"मैडम, आपने कितना वड़ा उपकार किया है, कैसे बतलाऊं!"

मेजर बराट जानते हैं मैडम न कहने पर हाई-पोज़ीशन की महिलाएं असंतुष्ट होती हैं। लेकिन मिसेज दास की प्रकृति और है। उन्होंने प्रतिवाद किया—"मुझे आप मैडम न कहें। मेरा नाम है मिनति। उम्र में मैं आपसे छोटी हूं। नाम लेकर वात करें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं।"

मेजर वराट ने अपने आपको सौभाग्यशाली समझा। मिसेज दास बोलीं—"आप पब्लिक ओपीनियन से जरा भी

न डरें। साहित्य-क्षेत्र में आप जो मर्जी करते रहें। मैं हमेशा आपके साथ रहूँगी। ज़रूरत पड़ते ही बताएं।"

सचमुच मिनति दास ने भरसक प्रयत्न किया। प्रगतिवादी पाठिका-समिति की संयोजिका कामरेड वासन्ती पाठक ने सरकारी निर्णय का तीव्र प्रतिवाद किया। जूट-मिल-मज़दूरों की एक सभा में उन्होंने कहा—"साहित्य के लिए प्रगतिशील लेखक-संघ के प्रसार की आवश्यकता है, गल्प के राष्ट्रीयकरण की नहीं।"

मेजर बराट कुछ डरपोक किस्म के आदमी हैं। लेकिन इस बार वह तनिक भी चिन्तित न हुए। वासन्ती पाठक की रिपोर्ट की एक नकल लेकर वह बस मिसेज दास से भेंट करने पहुंचे। बाकी सब कुछ मिसेज मिनति दास ने ही किया। उन्होंने फिर से विज्ञप्ति प्रकाशित की, आम सभा में भाषण दिए। उन्हीं की चेष्टा से पाठिका-समिति की विशेष सभा में मेजर बराट भाषण देने के लिए बुलाए गए। उस भाषण की रिपोर्ट मिसेज दास ने ही समाचारपत्रों को भेजी थीं।

मिसेज दास ने ही सबसे पहले खबर दी थी कि जो लेखक बेकार हो गए हैं, वे चुपचाप अपना दल तैयार कर रहे हैं। सुनते ही मेजर बराट नर्वस हो गए थे। इस लेखक-जाति से उन्हें बहुत डर लगता था। सुना है कैबिनेट में भी

उनके प्रति सहानुभूति रखने वाले कई लोग हैं। हो सकता है वे कोई ऐसा बटन दबा दें कि मेजर बराट का इतना बड़ा प्रमोशन धूल में मिल जाए।

मिनति दास बोलीं—"आप चिन्ता न करें। गुप्त रूप से मेरे घर आएं—ऐसे वक्त जब मोहल्ले के लड़के-लड़कियां कालेज चले जाते हैं।"

दोपहर के समय जब मेजर बराट गुप्त रूप से उनके घर पहुंचे तब श्रीमती दास दोपहर का खाना-पीना खत्म करके सोफे पर देह ढील कर उन्हीं की प्रतीक्षा कर रही थीं। वह मेजर बराट को बेडरूम में ले गईं। क्या पता कब कौन अचानक ड्राइंग-रूम में आ धमके!

मिनति दास के शयन-कक्ष में प्रवेश करते समय मेजर बराट के संकोच की सीमा न थी। लेकिन घुसते ही आँखें जुड़ा गईं। सचमुच रवीन्द्रनाथ ने देश की रुचि एकदम बदल दी है। गैरिक और सफेद के अलावा कमरे में और कोई रंग नहीं। दरवाज़े और खिड़कियों के परदे गैरिक। टेबिल क्लाथ और बेड-शीट सब सफेद। सिरहाने के पास मिसेज दास की एक बड़ी तसवीर है—उन दिनों की जब वह कॉलेज में पढ़ती थी। घबराहट में मेजर बराट मिसेज दास को 'मैडम' कह बैठे थे। मिसेज दास बोलीं—"देखती हूं कि आप अफसर लोग हम समाज-सेवियों को बनाते ही रहते हैं।"

"यह आप क्या कह रही हैं!" मेजर बराट का मारे डर के मुंह खुला रह गया। अभी उनका नया प्रमोशन है।

फिकेशन के अलावा और कुछ पढ़ा ही नहीं । दो-एक उपन्यास पढ़े होते तो इस मुसीबत में काम आते । थोड़ा रुककर कुछ सोच-विचारकर कह सकें, इसका भी उपाय नहीं । मुंह पर जो बात आयी वही कह बैठे—"नहीं मैडम, मेरे अच्छे लगने न लगने का कोई महत्त्व नहीं । देश-जाति…"

मिनति दास धीरे-धीरे आंचल का कोना मरोड़ती-मरोड़ती बोलीं—"न जाने क्यों, आपके बारे में लगातार सोचती रहती हूं । लगता है आपका अपना कोई नहीं है ।" दीर्घ श्वास छोड़ते हुए मेजर बराट बोले—"बिलकुल ठीक ! ऑनरेबिल मिनिस्टर के अलावा मेरा और कोई नहीं है । सभी मेरे विरुद्ध हैं । प्रायः पूरे का पूरा जीवन गवर्नमेंट सर्विस में बिताकर मैंने बहुतेरे शत्रु बना लिए हैं । दो बड़ी जांच-समितियों का सेक्रेटरी था—ढाई हज़ार पन्नों की रिपोर्ट मैंने लिखी थी । चेयरमैनों को मुझ पर इतना भरोसा था कि बिना रिपोर्ट पढ़े आँखें मूंदकर दस्तखत कर दिए । मिनिस्ट्री के सेक्रेटरी मुझसे तब से ही नाराज हैं । उसी रिपोर्ट से उनके बजट में और खर्च करने के अधिकारों में कटौती हुई । यूनेस्को सेमिनार में निरामिष अण्डों के परिगणन के बारे में जब लम्बी चर्चा छिड़ी थी तब भी मेरे शत्रुओं का अभाव नहीं था, मिनति देवी । इसलिए मैंने वहां सिर्फ इतना ही कहा—'धरती के सारे निरामिष अण्डे भारत भेज दिए जाएं, वे हमारी विधवाओं को खिलाए जाएँगे ।'

यह कहकर मेजर बराट ने जीभ काट ली, एक तो 'हमारी विधवाओं' का प्रयोग अटपटा था और तिस पर मिनति देवी स्वयं विधवा थीं। इसलिए चटपट थूक निगलकर बोले—"अगर मेरा वश चलता तो समाज का सुधार करके हुक्म देता—विधवाएं जो चाहें खा सकती हैं। देह के लिए प्रोटीन विशेष रूप से आवश्यक हैं और अण्डों में प्रोटीन होता है।"

वही मिसेज दास जो सभा-समितियों में अकेली ही एक सौ के बराबर हैं, जिनके सामनें कोई मुंह खोलने का साहस नहीं करता, वही कॉलेज में पढ़ने वाली किशोरी की भाँति मेजर बराट के मुंह की ओर टकटकी लगाए देखती रहीं। उनके हाथ से खाली गिलास हटाकर तौ[illegible] बढ़ाने लगीं। मेजर बराट हां-हां कर उठे। [illegible] बोलीं—"इस समय आप सरकारी कर्मचारी [illegible] अतिथि हैं। खैर, अपनी बात कहिए। बड़ा [illegible] रहा है सुनना।"

मेजर बराट बोले—"राष्ट्रीय [illegible] के सेक्रेटरी के रूप में भी मेरा नाम [illegible] कहते फिरे—मैंने अपने [illegible] जोड़कर विधवाओं और [illegible] पहुंचाया है। साहित्य [illegible] भी न मिलती। लेकिन सरकार [illegible] थी, जिसने कभी कुछ [illegible] में जिसमें कोई [illegible] गया,"

दीर्घ श्वास छोड़कर मेजर वराट बोले—'विश्वास करें, मिसेज दास, मेरा कोई नहीं है !"

मिनति दास की आँखें मानो अचानक वराट के दुख में छलछलाने लगीं। मेजर वराट को सांत्वना देती हुई बोलीं, "और कोई न हो, मैं तो हूँ। लेखकों के सम्मेलन से आपकी कोई क्षति न हो, यह देखना मेरा काम है।"

आज इतने दिनों बाद वराट साहब पुराने अखबारों की क्लिपिंग के रजिस्टर में खबर पढ़ने लगे—

"प्रकाशक-समिति के सदर दफ्तर में कल लेखकों का एक सम्मेलन आयोजित हुआ। लेकिन कार्यवाही के शुरू में ही गड़बड़ मच गई। सभापति के रूप में श्रीयुत नगेन्द्र-नाथ पाल एवं श्रीयुत नित्यहरि सरस्वती के नाम प्रस्तावित हुए। पहले बड़े जोर का वितण्डा मचा, फिर वोट डाले गए। केवल तीन वोटों से विजयी होकर 'सर्वजन श्रद्धेय' श्रीयुत नगेन्द्रनाथ पाल ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

"श्रीयुत नित्यहरि सरस्वती के दल ने तब प्रस्ताव किया—सरकारी निर्णय का प्रतिवाद करने के लिए आगामी पचीसवीं वैशाख से सभापति महोदय आमरण अनशन करने का संकल्प ग्रहण करें। प्रस्ताव होते ही उपस्थित लेखकगण ने एक स्वर में उच्चकण्ठ से इस प्रस्ताव का समर्थन किया।

"लेकिन स्वयं श्रीयुत पाल ने ही इस प्रस्ताव का तीव्र विरोध किया और घोषणा की—इस सभा के पीछे राज-नीतिक कारसाजी है। इसके बाद, वास्तविक साहित्य क्या

मेजर बराट बोले—"मैडम, किस तरह आपको धन्य-वाद दूं ?"

मिसेज दास बोलीं—"फिर मैडम ! लेकिन अब मैं खूब गुस्सा करूँगी।"

मेजर बराट घबराकर बोले—"नहीं-नहीं, मिनति देवी, आप नाराज न हों।"

मिनति दास ने पूछा—"आप कै बजे सोकर उठते हैं ?"

"जब आँख खुल जाए।"

"शायद कोई आपको जगा नहीं देता ?"

मेजर बराट बोले—"मेरा चपरासी है। लेकिन उससे कहा नहीं है। अफसर के रूप में मैं एक प्रिंसिपल बड़ी कठोरता से मानकर चलता हूँ। दफ्तर के स्टाफ से अपना प्राइवेट काम कराने का मन नहीं होता।"

बिस्तर पर लेटी-लेटी मिसेज दास खिलखिला पड़ीं—"मैं तो ज़िन्दगी-भर कठोर लोगों को ही देखती आयी हूँ। खैर, छोड़िए ! चाय पी ली ? मेरी नौकरानी अभी-अभी बेड-टी देकर गई है।"

मेजर बराट बोले—"रात-दिन सिर्फ आफिस की बात सोचता हूँ। इतनी बड़ी संस्था का पहला डी० जी० हूँ मैं !"

मिसेज दास बोलीं—"चाय मिली या नहीं, बताइए ?"

टेलीफोन बाएँ हाथ से दाएँ हाथ में लेकर बराट बोले—"तड़के चार बजे मैं बेड-टी लेता हूँ। उसके बाद

लेटे-लेटे ही फाइलें पढ़ना शुरू करता हूँ।"

"ब्रेकफास्ट में अण्डा, दूध वगैरह तो खाते हैं न ?"

"अण्डा, दूध, मक्खन कुछ भी नहीं खाता। यों ही वजन बढ़ता जा रहा है।"

"क्यों ? ब्लडप्रेशर रहता है क्या ?"

"ब्लडप्रेशर, डाइबिटीज, वात—मुझे कुछ भी नहीं। पिछली बार मेडिकल ऐक्ज़ामिनेशन के समय डाक्टरों ने कहा था—मेरी बाडी छब्बीस-सत्ताईस वर्ष के जवान की भाँति फिट है।"

मिनति दास बोलीं—"तो फिर क्यों नहीं खाते ? घर में कोई कुछ नहीं कहता आपसे ?"

"कहेगा कौन ?" मेजर बराट ने प्रश्न किया—"मेरा बावर्च या मेरा स्टेनो !"

"प्लीज़, बीमार होकर शरीर नष्ट मत कर बैठिएगा !" मिनति दास ने विनती की।

"उम्र भी तो काफी हो गई है। रिटायर होने के दिन आ गए हैं," मेजर बराट बोले।

"असम्भव !' मिनति दास ने प्रतिवाद किया।

"गवर्नमेंट सर्वेंट की उम्र तो दबाई नहीं जा सकती, मैडम !"

मिसेज दास बोलीं—"एक बात सुनिए ! आपको इस मिलिटरी नाम से पुकारना किसी को भी अच्छा नहीं लगता। हमारे साहित्य का मिलिटरी के साथ ऐसा कोई मधुर सम्पर्क नहीं है।"

मेजर वराट वोले—"मैडम, किस तरह आपको धन्य-वाद दूं ?"

मिसेज दास वोलीं—"फिर मैडम ! लेकिन अव मैं खूब गुस्सा करूँगी ।"

मेजर वराट घबराकर बोले—"नहीं-नहीं, मिनति देवी, आप नाराज न हों ।"

मिनति दास ने पूछा—"आप कै वजे सोकर उठते हैं ?"

"जव आँख खुल जाए ।"

"शायद कोई आपको जगा नहीं देता ?"

मेजर वराट वोले—"मेरा चपरासी है । लेकिन उससे कहा नहीं है । अफसर के रूप में मैं एक प्रिंसिपल बड़ी कठोरता से मानकर चलता हूँ । दफ्तर के स्टाफ से अपना प्राइवेट काम कराने का मन नहीं होता ।"

विस्तर पर लेटी-लेटी मिसेज दास खिलखिला पड़ीं—"मैं तो ज़िन्दगी-भर कठोर लोगों को ही देखती आयी हूँ । खैर, छोड़िए ! चाय पी ली ? मेरी नौकरानी अभी-अभी वेड-टी देकर गई है ।"

मेजर बराट वोले—"रात-दिन सिर्फ आफिस की वात सोचता हूँ । इतनी बड़ी संस्था का पहला डी० जी० हूँ मैं !"

मिसेज दास वोलीं—"चाय मिली या नहीं, वताइए ?"

टेलीफोन वाएँ हाथ से दाएँ हाथ में लेकर वराट वोले—"तड़के चार वजे मैं वेड-टी लेता हूँ । उसके वाद

विनय से गद्‌गद होकर उन्होंने उत्तर दिया—"तो फिर सिर्फ बराट कहकर पुकारें। मिनिस्टर भी मुझे इसी नाम से पुकारते हैं।"

"नहीं, आपका पितृ-दत्त बंगाली नाम ही अच्छा है। वेरी स्वीट नेम—विश्वनाथ।"

पलक मारते मेजर वराट अपनी भूल समझ गए—"ठीक कहती हैं, मैडम! देश के लोग क्या योंही आपको सिर पर बैठाए फिरते हैं। आज ही आफिस की नेमप्लेट वदले डालता हूँ। मेजर-फेजर कुछ नहीं। खाली श्री विश्वनाथ वराट।"

इसके बाद भी तो कुछ दिन वीत चुके हैं। मिनति दास 'साहित्य-परामर्श-समिति' की चेयरमैन मनोनीता हुई हैं। डी० जी० एल० आफिस में भी बहुत-से लोगों को नौकरी मिली है। दो सौ क्लर्क, सत्तर टाइपिस्ट, एक सौ पचहत्तर चपरासी, और भी न जाने कितने पदों की सृष्टि हुई है। सड़क के किनारे चार तल्ले का पूरा मकान किराये पर लिया गया है। प्रधानमंत्री नये आठ तल्ले के 'साहित्य भवन' की आधारशिला भी रख चुके हैं।

मेजर बराट का प्रताप अदम्य है। लेकिन मन में जरा भी चैन नहीं। मिसेज मिनति दास का नाम सुनते ही छाती सूखने लगती है। किस कुघड़ी में भद्र-महिला को समिति में लिया गया था। लेकिन ऐसा हुआ ही क्यों?

मिसेज दास इतनी बुद्धिमती हैं। राष्ट्र का गौरव हैं वह। मामूली-से सरकारी कर्मचारी पर नाराज़ होकर

उन्हें क्या मिल रहा है ?

पहले न जाने कितने दिनों तक बिस्तर पर लेटे-लेटे मिसेज दास टेलीफोन करती रही हैं। ज़रूरी चर्चा की खातिर विश्वनाथ बराट फाइलें बिस्तर के पास रख लेते थे। फोन बजते ही वे फाइल खोल लेते थे। लेकिन मिसेज दास पहले सवाल करतीं—"चाय मिली ?"

कुछ ही देर बाद मिसेज दास की नौकरानी और बराट साहब का चपरासी दोनों को चाय दे जाते। टेलीफोन के दोनों ओर चाय पीते-पीते बातें होतीं। मिनति दास के हुक्म के मुताबिक बराट आजकल दो उबले अण्डे खाते हैं। मेजर बराट ने कहा था—"मिसेज दास, आपसे मेरा कहना शायद उचित न हो, लेकिन निरामिष अण्डे आपके धर्म के विरुद्ध नहीं हैं। विज्ञान का कहना है, इन अण्डों में प्राण नहीं होता।"

मिसेज दास बोलीं—"मेरे लिए बेकार चिन्ता न करें, विश्वनाथ बाबू। अपने बावर्ची को फोन दीजिए। आपके खाने का मीनू बता दूं।"

"लेकिन ज़रूरी केसों की चर्चा पहले खत्म हो जाती तो···"

मिनति दास बोलीं—"बावर्ची को अभी न बताऊँगी तो वह पकाएगा कब ?"

लेकिन वे दिन अब न जाने कहाँ चले गए। आज मिसेज दास ही उनकी सबसे कठोर आलोचिका हैं। डी० जी० के हरेक काम में अब भूल खोजती फिरती हैं। रोज़—

ड़े नोट भेजती हैं। क्या नौकरी बच पाएगी या फिर
रानी पोस्ट पर लौट जाना पड़ेगा ! वह भी तो खत्म
। रिटायर होने की उम्र होने में कुछ ही महीने हैं।
र?

बाहर लाल बत्ती जलाकर मेजर बराट इसी चिन्ता
में हैं। और बगल के कमरे में उनके प्राइवेट असिस्टेंट काम
किये जा रहे हैं। डी० जी० को सीधे फोन पर नहीं पाया
जा सकता। पी० ए० की मार्फत जाना पड़ता है।

क्रि-क्रि···फोन बज उठा।

प्राइवेट असिस्टेंट रवीन्द्रनाथ पात्र आई० एल० एस०
(इंडियन लिटरेरी सर्विस) फोन उठाकर बोले—"पाट्रा
स्पीकिंग।"

"नमस्कार सर, अच्छे तो हैं ? मैं साहित्य कंट्रैक्टर
राधामाधव वंद्योपाध्याय बोल रहा हूँ। एक बार बराट
साहब से भेंट करना चाहता हूँ। ज़रूरी काम है। एपॉइंट-
मेंट दिलाना ही पड़ेगा।"

आई० एल० एस० के मिस्टर पात्र मुँह सिकोड़कर
बोले—"किसी नये उपन्यास का मामला है क्या ? साहित्य-
ठेकेदारों की संस्था की मीटिंग में डी० जी० तो उस दिन
कह ही चुके हैं। भविष्य में टेण्डर छपाए बिना गवर्नमें
और कोई उपन्यास नहीं लेगी। आप लोग बेकार ब

साहब का कीमती समय क्यों नष्ट करें। उनका काम केवल उपन्यास ही तो नहीं है—कहानी है, कविता है, जिल्द-बंधाई है, छापाखाना है। आप लोग सरकारी कंट्रैक्टर हो कर भी यह क्यों नहीं सोचते ?"

टेलीफोन की दूसरी तरफ से उपन्यास-कट्रैक्टर राधा-माधव बंद्योपाध्याय ने कातर अनुनय की—"नहीं सर, मिस्टर बराट को किसी टेण्डर के बारे में तंग नहीं करूंगा। अपने ठेकेदारों की संस्था की तरफ से भेंट करना चाहता हूँ।"

डायरी देखकर मिस्टर पाट्रा बोले—'लंच के ठीक बाद ही दफ़्तरी एसोसिएशन की युद्ध-परिषद् से उनकी ज़रूरी चर्चा होनी है। साहित्य-कंट्रैक्टरों से वह भेंट नहीं कर पाएँगे। पहले ही कह चुके हैं। जो हो, आप जब इतना कह रहे हैं तब फिर दोपहर के समय चले आइएगा। जैसे भी बनेगा आपकी भेंट करा दूंगा।"

राष्ट्रीयकरण के पहले राधामाधव अपने आपको उदीय-मान उपन्यासकार कहते फिरते थे। नई स्कीम के कारण बेकार होकर भूखे मरे जा रहे थे। लेकिन डी० जी० एल० मिस्टर बराट ने ही कृपा करके उपन्यास सप्लाई करनेवालों की सरकारी सूची में राधामाधव का नाम घुसा दिया था। इसीलिए आज वह साहित्य-कंट्रैक्टरों के मुखियाओं में हैं। अपना सिर हिलाकर राधामाधव बोले—"असंख्य धन्यवाद सर, थोड़ी-सी तकलीफ और दूंगा। मिस्टर बराट की बायो-लोजी अगर फोन पर ही बता दें तो बड़ा अच्छा हो।"

"ह्वाट!" मिस्टर पाट्रा एन० एल० एस० ने झुँझला-कर प्रश्न किया।

"जी, जी, जी, वो उनकी बायग्राफी—उनके जीवन की प्रधान-प्रधान घटनाएँ, उनकी जन्म-तिथि की ज़रूरत नहीं है। वह हमें जुबानी याद है। उसके बाद से बताएँ।"

मिस्टर पाट्रा ने काँच के नीचे से एक टाइप किया हुआ कागज़ निकाल लिया। मेजर विश्वनाथ बराट के जीवन का समस्त इतिहास उस पर अलग-अलग खानों में सजा हुआ था।

"लिख लीजिए," मिस्टर पाट्रा बोले—"मेजर वी० एन० बराट। एम० ए० बी० कॉम० (ऑनर्स) (लन्दन), देशिकोत्तम (डोमजूड़ विश्वविद्यालय), ऑनरेरी डाक्टरेट (कदमतल्ला, काशीपुर, श्याम बाजार एटसेट्रा)।"

"एटसेट्रा! यह कहाँ है? मैं तो सोचता था कि डोम-जूड़ ही आखिरी विश्वविद्यालय है!" राधामाधव ने उधर से प्रश्न किया।

मि० रवीन्द्रनाथ पात्र भी यह ठीक से नहीं समझ पाए। नाराज होकर बोले—"जो कहता हूँ लिखते जाइए। यह फॉरेन डाक्टरेट है। हमारे कंट्री में सिर्फ उन्हीं को मिली है।"

मि० रवीन्द्रनाथ पात्र टेलीफोन रखकर दीवार की ओर ताकने लगे। वहाँ ट्रैफिक पुलिस सिगनल की भाँति लाल, पीली और हरे रंग की तीन बत्तियाँ हैं। हरी बत्ती का मतलब है मेजर बराट के कमरे में इस वक्त जो चाहे

जा सकता है। पीली बत्ती का अर्थ है सावधानी से आगे बढ़ो, अर्थात् बराट साहब व्यस्त हैं, फिर भी उनके पी० ए० चाहें तो भीतर जा सकते हैं। और लाल बत्ती के माने हैं : कोई भीतर नहीं जा सकता। घुसते ही आफत !

दीवार पर लाल बत्ती ही जल रही है। चपरासी को बुलाकर मि० पाट्रा ने पूछा, "क्या मामला है? साहब के कमरे में कौन है ?"

चपरासी को रंगीन बत्तियों का हुक्म नहीं मानना पड़ता। मेज पर फाइल रखने के बहाने वह साहब का कमरा देख आया। पात्र से बोला—"डी० डी० (एस), सर।"

सुनते ही पात्र का चेहरा काला पड़ गया। रथीन सोम डिप्टी डायरेक्टर (शार्ट स्टोरी) ! कहानी लिखते-लिखते तो औंधे हुए जा रहे हैं। खाली दिन-रात डी० जी० के कमरे में घुसते हैं और निकलते हैं। मिस्टर पात्र ने चपरासी को फिर बुलाया —"मैंने कहा है न, मुझसे पूछे बिना कोई भी बड़े साहब के कमरे में न घुसे। उस दिन डी० जी० बड़े जोर से नाराज हो गए थे। सोम साहब किस समय गए वहाँ ?"

चपरासी रुककर बोला—"मैं क्या करूँ, हुजूर ! बड़े साहब ने खुद उन्हें फोन करके बुला लिया।"

"हूँ, समझा !" पी० ए० साहब बोले। फिर डायरी की तरफ देखकर चौंक उठे। अब ज्यादा देर नहीं। तुरन्त इंटरकोम उठाकर बटन दबाया, "मैं पात्र बोल रहा हूँ सर, परामर्श-समिति की मिसेज दास ने फोन किया था।'

"अच्छा, कुछ कहा था क्या ?"

"नहीं, आप सर···तब तक आए नहीं थे ।"

"और आप भी उनसे यही कह बैठे ?" मेजर वराट ने क्रुद्ध स्वर में पूछा ।

"नहीं सर, मैंने कहा आप सरप्राइज इंस्पेक्शन पर निकले हैं। पाठक-पाठिकाएँ किस ढंग की कहानियाँ पसन्द करती हैं इसकी खुद ही जाँच-पड़ताल करने के लिए साँतरा-पाड़ा की तरफ गए हैं ।"

मेजर बराट ने अब चैन की साँस ली—"बाई द बाई, हमने और एक गाड़ी के लिए जो जस्टिफिकेशन लिखने का आर्डर दिया था उसका क्या बना ? डिप्टी डी० जी० (एस्टेब्लिशमेंट) आज ही उसे पुट-अप करें। लास्ट में लिख दें, केवल सात गाड़ियों से इस विशाल शहर के अन-गिनत पाठक-पाठिकाओं के साथ सम्पर्क रखना हमारे लिये अब प्राय: असम्भव हो गया है। जन-सम्पर्क में कमी होने पर काम में हर्ज़ होने की बहुत संभावना है ।" मेजर वराट अब मिसेज दास की वात पर लौटे—"उन्हें अब फोन कीजिए तो !"

सोम से बोले—"तुम ठीक दस मिनट बाद ही आ जाना ।"

बराट साहब हर वक्त फोन उठाते ही विलायती कायदे से कहते—"ब्राट हियर ।"

लेकिन इस वक्त उनमें वैसा भरोसा नहीं। मिसेज दास उन्हें न जाने कैसी विष-दृष्टि से देखती हैं। और सत्ता

नहीं।"

मिसेज दास दाँत भींचकर बोलीं—"हाँ, भूल आप लोग करते हैं, दोष हम लोगों को मिलता है।"

मेजर बराट बात बदलने के उद्देश्य से पूछने लगे—"कब लौटीं ?"

"लौट आयी हूँ," उधर से तीखा उत्तर आया—"आज का अखबार खोलते ही जान जाएँगे।"

लज्जित होकर मेजर बराट बोले—"आज अखबार पढ़ नहीं पाया। सवेरे ही दफ्तर चला आया।" फिर थूक निगल-कर बोले —"कैसी हैं ? आपके सिर का दर्द अब कैसा है?"

"काम की बात पर आइए !" मिसेज दास ने जताया।

शरम-लिहाज छोड़कर बराट बोले—"सिर को नेग-लेक्ट मत कीजिए, वही तो आप लोगों की पूँजी है।"

मिसेज दास बोलीं—"सुनिए, आप लोगों की बदनामी से तो कान पक गए। किताब निकलने में देर क्यों हो रही है ? गुड़-सहकारी समिति के सेक्रेटरी ने जो प्रस्ताव किया था, हमने अपनी समिति में जो पास किया था उसका क्या हुआ ?"

"झोलागुड़' के बारे में लम्बी कहानी न ! मैं अभी देखता हूँ।"

"बस आप यही देखते रहिए। मिनिस्टर साहब को इस बार कहना ही पड़ेगा। अब मेरा वश का नहीं है।"

"रेलेवेन्ट फाइल मैं अभी मँगवाता हूँ, मिसेज दास।

---

१. झोलागुड़=गुड़ का तरल रूप

देखते ही आपको फोन करूँगा।"

फोन रखकर मेजर वराट फिर उसी अतीत में लौट गए, जिसमें मिनति दास रोज़ खुद ही फोन करती थीं। मेजर वराट मिसेज दास के घर भी जाते। घंटों आफिस की चर्चा होती। मिसेज दास चाय पिलातीं। उनके लिए मेजर वराट दो-एक बार रजनीगन्धा के फूलों के गुच्छे भी खरीदकर ले गए। वह मन-ही-मन सोचते कि मिसेज दास ही उनकी एच० एम० हैं। उनके कहने पर ही राजधानी समझ पाएगी कि मेजर वराट कितने प्रतिभावान अफसर हैं।

एस्टेब्लिशमेंट का एक सख्त केस बहुत दिनों से फाइनेन्स में सड़ रहा था। सुविधा के खयाल से, मेजर वराट ने अर्थमंत्री का बजट-भाषण रोमांचक कथा के रूप में पंचरंगा कवर बनवाकर प्रकाशित किया था। नाम रखा था—'जो माँगोगे वही मिलेगा'। नाम और कवर के बल पर ही पाँच हजार प्रतियाँ बिक गई थीं।

इसी के बाद गड़बड़ शुरू हुई। विरोधियों ने वक्तव्य दिये, आम सभा की साज़िश की। लेकिन वराट को जरा भी चिन्ता नहीं हुई। मिसेज दास ने चुनौती दी थी—"कौन कहता है कि बजट-भाषण साहित्यिक कृति नहीं है!" और उन्होंने खुद ही छद्म नाम से लेख लिखा था—'साहित्य के नये क्षितिज'। इसमें उन्होंने विचार प्रकट किया कि गैर-सरकारी साहित्यिक जो नहीं कर पाए श्री वराट के नेतृत्व में सरकार ने वही कर दिखाया है। नीरस अर्थनीति मेजर वराट की प्रतिभा के स्पर्श से सरस साहित्य बन उठी है।

मिसेज दास ने ढाई सौ प्रशंसा-पत्र भी एकत्र कर दिये थे। पत्र लिखने वालों ने वराट का अभिनन्दन करते हुए यह माँग की थी कि 'जो माँगोगे वही मिलेगा' जैसी 'प्रेरणा-प्रद' कृतियाँ प्रतिमास प्रकाशित होनी चाहिए।

इन्हीं चिट्ठियों का वण्डल लेकर मिसेज दास एक दिन वराट के घर आयी थीं। मेजर वराट कभी उनको, कभी अपने घर को देखते रह गए थे। उन्होंने कहा था, "क्षमा कीजिएगा सारी चीज़ें बिखरी पड़ी हैं। नौकर जो कर देते हैं उसी के भरोसे रहना पड़ता है।" मेजर वराट नहीं चाहते थे कि घर गन्दा देखकर मैडम की ओपीनियन खराब हो।

लेकिन मैडम ने बातचीत को कुछ और ही मोड़ दे दिया—"इतना बड़ा घर आपको खाली-खाली नहीं लगता?"

मेजर वराट डरने लग गए थे। क्या पता मिसेज दास और किसी अफसर को इस घर में घुसाने की सोच रही हों। बोले—"अभी जरूर खाली है, पर हमेशा ऐसे ही थोड़े रहेगा। तब सारे घर की जरूरत पड़ेगी। क्या पता जगह कम भी लगने लगे।"

मिसेज दास का चेहरा चमक उठा था। वह बाद में भी आयी थीं। चाय पी थी। घंटों गप्पें की थीं। घर पहुँच-कर फिर फोन किया था। वराट ने चुपचाप पता किया था कि उनकी पर्सनल फाइल मंत्रीजी की टेबिल पर पड़ी है। इस समय मिसेज दास की राय का बड़ा मूल्य है।

एक दिन रात में मिसेज दास ने फोन किया—"काम-

काज कैसा चल रहा है ?"

"आपकी कृपा से बहुत ही अच्छा !"

"और कुछ कहना है ?" मिसेज दास ने पूछा।

"और क्या कहूँ ? आपकी कृपा के बिना मेरे लिए एक कदम भी चलना असंभव है।"

मिसेज दास ने कहा था—"आपसे एक सवाल करूँगी ? तुरन्त उत्तर देने की जरूरत नहीं है। बाद में भी दे सकते हैं।"

"सारी फाइलें इस समय मेरे पास नहीं हैं। पर संभव हुआ तो अभी उत्तर दूंगा," मेजर बराट बोले।

मेजर बराट समझते थे, इतनी दूर से भी मिसेज दास की मार्फत एच० एम० उनकी परीक्षा ले रहे हैं। तो लें ! उनके कर्मचारी हैं वह। हर वक्त परीक्षा ले सकते हैं।

मिसेज दास ने उनसे जो सवाल किया था उसका उत्तर वह हाथ के हाथ दे सकते थे, लेकिन उन्होंने जान-बूझकर ही नहीं दिया। बोले—"आपको असंख्य धन्यवाद, मिसेज दास ! मैं आज रात सोच-विचार करने के बाद उत्तर देना चाहता हूँ।"

मिसेज दास लज्जा-जड़ित कण्ठ से बोलीं—"ठीक है, मैं तो आपके हाथ के ही पास हूँ। अर्थात् फोन के पास। आप जब चाहें फोन करें। जरूरत हो तो आधी रात को भी कर सकते हैं। मैं फोन उठाऊँगी।"

मेजर बराट का उत्तर तैयार था। एच० एम० एवं मिसेज दास कितने ही चालाक क्यों न हों, मेजर बराट भी

कम नहीं हैं। वह गवर्नमेंट के इतने महत्त्वपूर्ण और इतने विशाल दफ्तर को कानी अँगुली पर नचा रहे हैं।

तड़के ही उन्होंने उत्तर दिया था। एक बार फोन बजते ही मिसेज दास ने रिसीवर उठा लिया था। इसके बाद विश्वनाथ बराट ने मिनति दास के सवाल का जवाब दिया था। पर फिर उसके बाद···?

उसके बाद से ही सब कुछ पलट गया। वह मिसेज दास मानो कहीं खो गई।

मिसेज दास ने उस दिन जो सवाल किया था, मेजर बराट इतने दिनों बाद उसे फिर एक बार याद करने लगे थे। लेकिन ठीक उसी समय रथीन सोम फिर कमरे में आ धमके।

"सर!"

"क्या काम है तुम्हें ?"

"आपने ही दस मिनट बाद आने को कहा था।"

मेजर बराट मानो सब कुछ भूल गए। बोले—"मैंने तो तुम से कह दिया है। कहानी-सेक्शन में मैं स्टाफ और नहीं बढ़ा सकता। इसी स्टाफ से तुम लोगों को अपना उत्पादन ठीक-ठीक रखना होगा। आई एम नौट इंटरेस्टेड इन एक्सक्यूजेज। आई एम इंटरेस्टेड इन गैटिंग थिंग्सड न। दशमलव-तौल-प्रणाली पर लिखी गई साठ कहानियों का एक

संकलन तुम्हें वार्षिक समारोह के दिन निकालना ही पड़ेगा।"

"सर, साठ कहानियों मे से सिर्फ तीन कहानियों का ड्राफ्ट मिला है। उपन्यास डिपार्टमेंट में तो अभी काम कम हैं। वहाँ हमसे तिगुना स्टाफ है," रथीन सोम ने कातर स्वर से निवेदन किया।

"रथीन, तुम अपने काम से मतलव रखो। उपन्यास के वारे में मत सोचो। एडवाइजरी कमेटी ने वार-वार कहा है कि आप नॉवेल डिवीजन को मजवूत वनाइए। आफ्टर आल हर देश के साहित्य का मान नॉवेल से ही निर्धारित होता है। टाल्स्टाय को ही ले लो। उन्हें हम कहानी-लेखक के रूप में जानते हैं या नॉवलिस्ट के रूप में जानते हैं?"

रथीन अव सिर खुजाते-खुजाते वोला—"लेकिन सर-मोपासां?"

मेजर वराट सिर पर हाथ रखकर बैठ गए—"मिनिस्ट्री इतना वड़ा दायित्व मेरे ऊपर डालकर निश्चिन्त होकर सो रही है। लेकिन मेरी एडमिनिस्ट्रेटिव डिफिकल्टी की बात कोई भी नहीं सोचता। लिटररी सर्विस तो खोल लीं, लेकिन पव्लिक सर्विस कमीशन एन० एल० एस० काडर में सवसे पूअर क्वालिटी के केण्डीडेट भेजता है।"

रथीन सोम एन० एल० एस० (फॉरेन) में जाना चाहते थे। लेकिन वाइवा वोसे में कुछ नम्वर कम पाने के कारण व्रूफे वैंक्वैट की जगह झोलागुड़ और दशमलव-पद्धति से सिर मार रहे हैं। वह डी० जी० की तरफ टक-टकी लगाकर ताकते रहे।

मेजर बराट बोले—"उस दिन मिसेज दास से इस...
...ी हो रही थी। वह बोली थीं कि मोपासां सस्ते हैं, और ...ल्स्टाय अमूल्य। और यह भी समझ लो, अगली बार ...सेज दास ही लिटरेचर-विभाग की उपमंत्री बन रही हैं।"

डायरी की तरफ ताककर मेजर बराट बोले—"अरे हाँ, उस लम्बी कहानी का क्या हुआ, झोलागुड़ वाली ? मिसेज दास ने फोन किया था। उन्हें अभी टेलीफोन पर बताना है।"

"मैं अभी देखता हूँ, सर!" कहकर उप-निदेशक (कथा) अपनी व्यथा लेकर चले गए।

सोम साहब ने अपने कमरे में घुसते ही असिस्टेंट डिरेक्टर (शार्ट स्टोरी विंग) को बुलाया—"झोलागुड़ के केस का क्या हुआ ? आपकी वजह से मैं और कितने दिनों तक गालियाँ खाता रहूँ। डिरेक्टर साहब तो डी० जी० की मक्खनबाजी करके पेरिस लिटरेरी सेमिनार में चले गए। यहाँ गुड़ गोबर हुआ जा रहा है। झोलागुड़ के सारे काग-ज़ात मुझे आज ही चाहिए।"

ए० डी० एस० डब्ल्यू० ने अपने कमरे में वापस आते ही आफिस सुपरिंटेंडेंट को बुलाया—"झोलागुड़ की फाइल अभी लेकर आइए।"

ओ० एस० बोले—"मुझसे क्यों कह रहे हैं, सर! अपने १६०-१०-३३० स्केल के राइटर को बुलाइए।"

राइटर की बुलाहट हुई—"झोलागुड़ की कहानि... पुट-अप करने के लिए पन्द्रह दिन पहले नोट दिया थ...

कुछ नहीं करते आप। अब चार्ज-शीट हजम करनी पड़ेगी। डी० जी० आगबबूला हो गए हैं।"

राइटर बिगड़कर बोले—"मैं क्यों चार्ज-शीट हजम करूँ, सर? मेरे असिस्टेंट मेरी बात ही नहीं सुनते। आफिस में डिसिप्लिन नाम की तो कोई चीज़ ही नहीं।"

"दो सौ रुपये तनख्वाह लेते हैं, फिर भी ज़िम्मेदारी नही लेते। यह नहीं हो सकता!"

राइटर स्नेहमय मित्र इस बार बिगड़ खड़े हुए, "आप तो यही कहेंगे, सर! इसी सेक्शन से रात-रातभर जागकर मलेरिया के ऊपर डेढ़ सौ कहानियाँ निकाल चुका हूँ। नारियल के ऊपर तीन सौ पाँच कहानियाँ किसने लिखकर दी थीं, सर? तिस पर जब तनख्वाह बढ़ाने का मौका आता है तब नॉवेल डिपार्टमेंट! उनमें तो राइटर नाम का कोई बचा ही नहीं। वे लोग तो नाम बदलकर चार्ज-मैन, फोर-मैन, वर्क्स-मैनेजर हो गए। उस निर्मल साधुखाँ को ही देख लीजिए। मुझसे भी जूनियर था। फोरमैन (फिनिशिंग) हो गया। दिन-भर बैठा अखबार पढ़ता रहता है। पचास-पचास प्राइवेट टेलीफोन कॉल करता है तब कहीं तीसरे पहर ड्राफ्ट नॉवेल के दो-चार पन्ने माँजता-घिसता है। तन-ख्वाह भी ज्यादा है। और फिर टेक्नीकल मज़दूर के नाम पर ओवरटाइम। 'पे कमीशन' तो उन्हीं को बड़ा आदमी बना गया, सर। हम गरीबों के लिए तो किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा।"

ए० डी० डी० एस० परेशानी से सिर पकड़कर

बोले—"ये बातें सुनने के लिए मेरे पास समय नहीं है। अपने असिस्टेंट को बुलाइए।"

असिस्टेंट बेचारा नौकरी में नया-नया आया है। अभी तक कन्फर्म नहीं हुआ। उसे देखते ही ए० डी० डी० एस० चीत्कार कर उठे—"कितनी तनख्वाह पाते हैं ?"

"जी, बेसिक साठ।"

"आजकल के यंगमैनों में आनेस्टी का तो नाम नहीं। झोलागुड़ की लम्बी कहानी का जो ड्राफ्ट माँगा गया था, उसका क्या हुआ ?"

ए० डी० एस० एस० डब्ल्यू० विकट चीत्कार कर उठे—"देखूँ, पेपर देखूँ, कितना लिखा है ?"

बेचारे असिस्टेंट ने रुआंसे होकर फाइल आगे कर दी। ड्राफ्टशीट की ओर ताककर इस बार छोटे साहब ने सिर के बाल नोचना शुरू किया—"यह आपने किया क्या है ? आप लोग तो सारे आफिस को, यही नहीं, अपने देश को भी मिट्टी में मिलाकर छोड़ेंगे। अस्सी पन्ने के ड्राफ्ट की बात है और आपने अभी दस लाइनें लिखी हैं। सो भी लिखकर काट दी हैं। माई लार्ड !"

राइटर बोले—"मैं क्या करता, सर ! तीन दिन से तगादा कर रहा हूँ, चटपट ड्राफ्ट दीजिये। मैं देखभा[ल] कर ए० डी० एस० एस० डब्ल्यू० को दे दूँ। वह डी० डी[०] एस० एस० को देंगे। वह डिप्टी डी० जी० को देंगे। वह उसे अप्रूव फिर सीनियर डी० डी० जी० को देंगे। वह अगर ज़रूरी समझेंगे तो परा[...] के डी० जी० को देंगे।

समिति को दिखाएँगे और प्रेस में भेजने के पहले गुड़-उन्नयन कमिश्नर के साथ बातचीत करेंगे। लेकिन सर, जूनियर स्टाफ कुछ करता ही नहीं। रोज़ सवेरे फाइल लेकर बैठता है। दिन-भर कलम खुला रहता है और फिर शाम को फाइल बन्द करके चला जाता है।"

"चार्ज शीट," छोटे साहब चीत्कार कर उठे—"बाद में मुझे बुरा आदमी कहकर दोष न दीजिएगा। बुढ़ापे में मैं बाल-बच्चे लेकर रास्ते में तो बैठ नहीं सकता। कर्तव्य की चरम अवहेलना, ग्रौस डेरिलिक्शन ऑफ ड्यूटी, आइ-टम फाइव। आपको बरखास्त क्यों न कर दिया जाए!" सुनते ही छोकरा अचानक फूट-फूटकर रो पड़ा। छोटे साहब चट से कुर्सी से लपक उठे—"बात क्या है, रोते क्यों हो?"

छोकरा बराबर रोता जा रहा था। पास ही खड़े एक लड़के ने कहा—"वह क्या करे, सर। रोज चेष्टा करता है लेकिन झोलागुड़ के बारे में लिखने लायक प्लाट किसी भी तरह नहीं मिलता। अभी हाल ही में तो बड़ी मेहनत से पटिया पर एक कहानी लिखी थी। अब उसका कोई वश नहीं चलता।"

छोटे साहब मानो सहानुभूति से भीगकर नरम पड़ गए।

राइटर से पूछा—"उसे कच्चा माल दिया था या नहीं? प्लाट सेक्शन के लोग क्या करते हैं? क्या पहली तारीख को वे पाकिट में तनख्वाह नहीं ठूंसते!"

लाल-पीले होकर चेयर छोड़कर छोटे साहब उठे और

आदमी से कहियेगा। मैं तीन महीने की छुट्टी पर जा रहा हूँ। अजी साहव, मैं क्या करूँ ? मैं तो जानता हूँ, दो इंस्पेक्टर पिछले पन्द्रह दिनों से भोलागुड़ के डिटेल के लिये गाँवों में मारे-मारे फिर रहे हैं। लेकिन वहाँ उन्होंने कुछ नहीं किया, यह मैं कैसे जानूँ ? पर जो रिपोर्ट आयी तो देखा कि वह तो वही पुरानी पटिया की रिपोर्ट है। सिर्फ पटिया काटकर हर जगह भोलागुड़ लिख दिया गया है। आप फाइल नम्वर नोट कर सकते हैं। डी० जी० एल। प्लाट। ३४५। जी० टी० (पटिया) डेटेड फर्स्ट फेब्रूएरी। करप्शन का केस है, जनाव !"

"तो फिर मैं क्या करूँ !" सोम साहव ने पूछा। उधर से उत्तर आया—"इस बार मैं किसी रिलाइवल इंस्पेक्टर को भेज रहा हूँ। तव तक भैया, इस केस को ज़रा गोल कर दो। अगर तुम्हें मुश्किल होती हो तो वैसा कहो, मैं फाइनेन्स की मार्फत कोई ऑब्जेक्शन उठवा देता हूँ। वहाँ का नरहरि चटर्जी मेरा क्लास-फ्रेंड है।"

फोन रखकर सोम साहव क्रुद्ध स्वर में वोले—"आप लोग मेरी आँखों के सामने से चले जाइये। जिनमें अस्सी पन्ने की एक कहानी चटपट लिख डालने की हिम्मत नहीं है वे किस वल पर उपन्यास सेक्शन में ट्रांसफर होना चाहते हैं ?"

साहव ने स्टेनो को बुलवाया। केस के वारे में लम्बा डिक्टेशन देकर वोले—"चटपट ले आइए। मैं फाइल अपने हाथों ले जाऊँगा।"

फाइल हाथ में लेकर सोम साहब मेजर बराट के कमरे में घुसने वाले थे। चपरासी ने रोक दिया—"माफ करें, हुज़ूर। पी० ए० साहब का हुक्म है उनसे पूछे बिना बड़े साहब के कमरे में कोई न जाए।"

सोम साहब झुँझलाकर पी० ए० के कमरे में घुसे। घुसते ही देखा, साहित्य-कंट्रैक्टर राधामाधव वंद्योपाध्याय बैठे हैं। राधामाधव ने उन्हें देखते ही कुर्सी से खड़े होकर नमस्कार किया—"कैसे हैं, सोम साहब ?"

"अरे, हमारा क्या है! कहानी सेक्शन को तो जानते ही हैं। हर वक्त गड़बड़ चलती रहती है। उधर पालित साहब तीन महीने से यूरोप में पड़े हैं। यूनेस्को के तत्त्वावधान में कहानी सेमिनार हो रहा है।"

राधामाधव ने विनीत भाव से कहा—"हो सकता है कहानी का मिज़ाज समझकर आने की कोशिश कर रहे हों।"

सोम साहब बोले—"पता नहीं, 'तटस्थ देशों में कहानी की प्रगति' इस विषय पर ढाई सौ पन्नों का टेक्नीकल निबंध तो हमारे ही सेक्शन द्वारा तैयार किया गया है।"

सोम साहब इस बार प्राइवेट सेक्रेटरी पात्र से बोले—"डी० जी० से मुझे अर्जेण्ट काम है।"

"अरे, अब क्या अर्जेण्ट ?" मिस्टर पात्र बोले।

डरते हुए सोम ने कहा—"क्यों, डिपार्टमेंट खत्म कर देने का वह पुराना प्रस्ताव क्या फिर उठा है ? बताइए न, जनाब! सारी खबरें तो पहले आपके ही पास आती हैं।"

मिस्टर पात्र रहस्यमय भाव से मुसकराकर बोले—"इस बारे में कुछ नहीं कह सकता। टॉप सीक्रेट। जो हो, अब आपका काम बन्द होने वाला है। जिल्द-समिति ने हड़ताल का नोटिस दिया है। उनके तीन प्रतिनिधि इस वक्त डी० जी० से चर्चा कर रहे हैं।"

मिस्टर सोम इस बार जरा नरम पड़कर एक कुर्सी घसीटकर बैठ गए। "हमारा क्या है! हम तो पर्मानेंट स्टाफ के हैं। आफिस खत्म हो गया तो भी हमारे लिए तो प्रोवाइड करना ही पड़ेगा।"

बराट साहब के कमरे की घंटी इस बार भर्राई आवाज़ में बज उठी। मिस्टर पात्र तुरन्त भीतर चले गए।

राधामाधव मौका पाकर सोम से बोले—"पहली अप्रैल को क्या कर रहे हैं! उस दिन की शाम कृपा करके जरा फ्री रहिएगा।'

इसी बीच जिल्द वाले प्रतिनिधि कमरे से निकले। वे आपे से बाहर हो गए हैं। बराट साहब के भ्रष्टाचार-विरोध-विभाग के इंस्पेक्टर जिस तरह मौके-बेमौके उन पर हमला कर रहे हैं उसके कारण हड़ताल के अलावा अब और कोई उपाय नहीं है। भ्रष्टाचार इंस्पेक्टर का कहना है कि ये सरकारी कवर के नीचे गैर-कानूनी किताबें बाँध-कर भेजते रहे हैं।

अब पी० ए० भी बाहर आ गए। सोम साहब और समय नष्ट न कर सीधे बराट साहब के कमरे में घुस पड़े।

"मिली भोलागुड़ की फाइल?" बराट साहब ने चुरुट

का कश लेते हुए सवाल किया।

ठीक इसी समय राधामाधव को लेकर पी० ए० फिर कमरे में आए। बोले—"एक्सक्यूज मी, सर। राधामाधव बाबू आपसे मिलने के लिए बड़ी देर से इंतज़ार कर रहे हैं।"

राधामाधव बोले—"कैसे हैं, सर?"

"अच्छे रहने का अब उपाय भी क्या है? यह क्या कोई ऑर्डिनरी गवर्नमेंट-डिपार्टमेंट है जो जम्हाई लेते-लेते और अँगड़ाई तोड़ते-तोड़ते वक्त काट दिया जाए। इसका नाम है साहित्य! विशेष रूप से इस देश में। यहाँ प्राइवेट सेक्टर हर वक्त हमें बम मारकर उड़ा देने की कोशिश करता रहता है। सुना है, पुराने साहित्यकार शायद फिर दल बना रहे हैं। नगेन पाल शायद दोबारा अनशन की धमकी दे रहे हैं। उनके हर्जाने के केस का तो अभी तक फैसला नहीं हुआ!"

राधामाधव बोले—"सब हो जाएगा, सर! आप मौजूद हैं तो गवर्नमेंट, पाठक-पाठिका, साहित्य-ठेकेदार, स्टाफ, प्रेस, जिल्दसाज किसी पर भी अत्याचार नहीं होगा। हाँ, मैं कह रहा था सर, पहली अप्रैल की शाम खाली रखें। कोई एंगेजमेंट न करें।"

मेजर बराट बोले—"क्यों? क्या बात है?"

"वह फिर बताऊँगा, सर। पर, हमें पहले पता नहीं था। इतना बड़ा कोइन्सिडेन्स! आपके जन्म और साहित्य के राष्ट्रीयकरण की तारीख एक ही है।"

मेजर बराट मानो चौंक उठे। मुसकराकर बोले—"लेकिन यह बात तो मेरे अलावा किसी को भी मालूम न थी। टॉप सीक्रेट खबर है। देखता हूँ आप लोग मुझे कहीं का न छोड़ेंगे।"

राधामाधव बोले—"आपको खुश करने के लिए नहीं कह रहा हूँ, सर! देश के साहित्य के लिए आपने जो कुछ किया है वह और कोई कभी नहीं कर सका। इतनी बड़ी खबर अगर हम जाने बिना रह जाते तो भविष्य हमें कभी क्षमा न करता। उस दिन हम आपका जन्मोत्सव मनाएँगे।"

"बिलकुल नहीं, बिलकुल नहीं।" मेजर बराट ने प्रतिवाद किया—"उसी दिन रात को मेरी रेडियो टाक है—'अप्रैल से अप्रैल : राजकीय साहित्य का एक और वर्ष !'"

मेजर बराट ने अब सोम की ओर ताका—"अरे हाँ, याद आया। मुझे अपनी रेडियो टाक के लिए कुछ पाइंट कल सवेरे दस बजे तक चाहिए। मिसेज दास को भी दिखा लूंगा।"

"कल सवेरे ही?" सोम ने डरते-डरते पूछा।

"इसमें ऐसी क्या बात है?" बराट साहब बोले—"मोटे तौर पर हमें दिखाना होगा कि राष्ट्रीयकरण होने के बाद से साहित्य की सर्वांगीण उन्नति हुई है। उपन्यास के बारे में तेरह फी-सदी बढ़ोत्तरी का वचन दिया था, लेकिन वास्तव में हमने १३७ फी-सदी वृद्धि कर दिखाई। कहानी में तो और भी अधिक उन्नति की है। २७५ नये विषयों पर—जैसे सूत, बतख, मुर्गी, दस्तकारी, जापानी तरीके की

खेती, जूट, कोयला, श्रमिक बीमा, पटिया, यहाँ तक कि झोलागुड़ तक पर कहानियाँ लिखी जा रही हैं। पटिया की कहानियों का जो संकलन हमने प्रकाशित किया है उसे होनोलूलू सरकार द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक-प्रदर्शनी में उच्च प्रशंसा मिली है।"

सोम अब कुछ आश्वस्त होकर बोले—"लेकिन सर, झोलागुड़ ?"

"उस कहानी का ड्राफ्ट लाए हो न !"

ठीक इसी वक्त टेलीफोन बज उठा। मिसेज दास फिर बात कर रही थीं। वह पाँच बजे आफिस में आना चाहती हैं।

"अच्छी बात है, आ जाइए। जो भी एंगेजमेंट हैं मैं अभी कैंसिल कर देता हूँ।" वराट ने उत्तर दिया।

फोन रखकर मेजर वराट बोले—"मिसेज दास आने वाली हैं। ड्राफ्ट देते जाओ।"

सोम सिर झुकाकर बोला—"अभी लिख नहीं पाया, सर।"

"हैं ? लिख नहीं पाया, इस आफिस के साढ़े आठ सौ लोग कर क्या रहे हैं ?"

सिर पर हाथ रखकर बैठ गए वराट साहब—"तुम सब-के-सब क्या एक साथ मेरे खिलाफ षड्यंत्र कर रहे हो ? मामूली झोलागुड़—उसके बारे में एक कहानी लिखने वाला कोई नहीं है इस आफिस में ? मिसेज दास को मैं क्या मुँह दिखाऊँगा ?"

"किसी कंट्रैक्टर को सौंपकर झट से करा लूं ?" सोम ने सहमते-सहमते निवेदन किया।

"वह तो टेण्डर का मामला है। अखवार में विज्ञापन निकलेगा। सीलवन्द टेण्डर आएँगे। इतने दिनों में तो मैं यहाँ से विदा हो जाऊँगा।"

"सिंगल टेण्डर किसी नामी कंट्रैक्टर को देकर। राधा-माधव वावू तो सामने ही मौजूद हैं।"

"मैं तो उपन्यास-कंट्रैक्टर हूँ। छोटे कामों में मेरा पड़ता नहीं खाता। मेरे ओवरहैड जरा ज्यादा हैं।" राधामाधव वोले—"हाँ, सर कहें तो और वात है।"

"आज ही चाहिए। मिसेज दास पाँच वजे आ रही हैं। तव तक चाहिए। कर सकेंगे ? मुझे इस अपमान से वचा सकेंगे ? मैं आपको खुश कर दूंगा। उपन्यास-कोश की योजना वन रही है। ओपीनियन के लिए फाइनेन्स में गई है। २५ खण्डों का काम है। लगभग २५००० पन्नों का।"

राधामाधव वोले—"इतने कम समय में लिखना ? एक जना नहीं कर पाएगा। तीन ओवरसियर लगा देता हूँ। आपको मिल जाएगा, सर! अव वचन दे रहा हूँ तो कहानी आपको पाँच वजे दे ही दूंगा। सव्जेक्ट भोलागुड़ न ?"

वराट स हव का फोन उठाकर राधामाधव ने अपने आफिस से मिलाया। मैनेजर से वोले—"तीन या चार ओवरसियरों को वैठा दो। एक वीच से, एक प्रारम्भ से और एक अन्त का भाग लिखना शुरू करे। कैरेक्टरों के नाम रख

लो, रमेश, राधेश, रासमणि, सुलता और पद्मिनी। उनसे कहो कि इस ढंग से लिखें, प्राचीन काल में गुड़, पराधीनता के युग में गुड़ पर संकट, स्वाधीन भारत के एक गुड़ प्रस्तुति-केन्द्र में रमेश और पद्मिनी का विवाह। क्विक, क्विक। साढ़े चार बजे मुझे कापी चाहिए। अर्जेण्ट रेट दे देना। चटपट कर डालेंगे।"

राधामाधव फोन रखकर वराट से वोले—"सर, आप इन बातों की चिन्ता न करें। आप तो बस पहली अप्रैल की शाम हाथ में कोई काम न लें।"

वराट गम्भीर भाव से सोम से वोले—"किस तरह काम करना चाहिए प्राइवेट सैक्टर से सीखो। तुम लोग चार महीनों में जो न कर सके वह चार घंटों में हो जाएगा। और हाँ, मैं चाहता हूँ एक-एक को चार्जशीट दे दी जाए। तुम्हारी चार्जशीट भी मैं स्टैनो को डिक्टेट कराये देता हूँ।"

सोम मुंह लटकाकर बाहर चले गए। राधामाधव कातर होकर वोले—"साल का आखिरी दिन है। भला क्यों किसी गरीब चपरासी की नौकरी लेते हैं, सर!"

"क्यों, चपरासी क्यों?" वराट ने झुंझलाकर पूछा।

"आखिर में तो कोई चपरासी ही दोषी प्रमाणित होगा। तिस पर जब मैं आपको ठीक समय पर बढ़िया माल भेजे दे रहा हूँ, तब फिर कम से कम इस बार गुस्सा थूक दीजिए, सर। मिसेज दास को आप उनकी राय जानने के लिए कहानी दे दें।"

मेजर वराट बोले—"अच्छा! पर पहली अप्रैल को क्या होगा? बाइण्डर एसोसिएशन, प्रेस स्टाफ एसोसिएशन, कहानी समवाय समिति, सब-के-सब एक ही दिन समारोह करना चाहते हैं। पर मैं ठहरा एक अकेला आदमी। इसके अलावा एक बात और भी है। वह मैं आपको कल बताऊँगा। बड़ी गोपनीय बात है। फिर जो करना हो करें।"

राधामाधव बोले—"ठीक है, सर! आप जब जो कहेंगे, वही होगा।"

राधामाधव ने अब अपनी बात छेड़ी—"एक मामले में सर, लिपट गया हूँ। अगर आप मिसेज दास से जरा कह दें। वह कहती हैं कि वह उसे लेकर राजधानी तक जाएँगी। कंट्रैक्टर एन० सी० धाड़ा को पिछली बार टेण्डर नहीं मिला था। इसलिए वह साजिश कर रहा है। मिसेज दास से मेरे खिलाफ शिकायत की है।"

उतरे चेहरे से बराट बोले—' मिसेज दास के मामले में अगर मैं कुछ कहूँगा तो आपकी हानि हो जाएगी। आप किसी और से कहलाने की चेष्टा कीजिए।"

"नहीं सर, मिसेज दास बड़ी स्ट्रिक्ट महिला हैं। अगर कोई कर सकता है तो आप ही कर सकते हैं। मिसेज दास आपको किसी भी तरह आघात नहीं पहुँचाएँगी।"

बराट अब कुर्सी टेबिल के पास घसीट लाए—"बाहर से आप लोग ऐसा सोचते हैं यह तो अच्छी बात है। लेकिन पता है, मिसेज दास ने ही शायद मिनिस्टर से शिकायत की है कि मुझे एक्सटेंशन न दिया जाए।" मिस्टर बराट कुछ

रुके, फिर बड़े दुःख से बोले—"इसी साल मुझे विदा लेकर चल देना होगा। आप समझ सकते हैं कि मेरे बाल-बच्चे नहीं कि उनकी कमाई खाऊँ। बैचलर आदमी हूँ, कभी देख-भालकर नहीं चला। हमेशा लापरवाही से खर्चा करता रहा।"

राधामाधव को लगा कि बराट की आंखें छलछला आयी हैं। फिर भी उन्होंने कोई सांत्वना नहीं दी। चुपचाप सुनते रहे।

मिस्टर बराट कहते गए—"आप से सारी बात डिस-क्लोज़ नहीं कर सकता। अगर कर सकता, अपनी सीक्रेट फाइल खोलकर आपको दिखा सकता तो आप समझ पाते। आपने जरूर सुना होगा, बेकार साहित्यिक इतने दिनों तक ऊँघ रहे थे। अचानक न जाने क्या हुआ, नगेन पाल ने तय किया है कि इस बार सचमुच पहली अप्रैल से अनशन शुरू कर देंगे।"

राधामाधव भी अवाक् होकर बोले—"यह कैसे हुआ, सर ?"

अभिज्ञ मिस्टर बराट गहरी हताशा में गर्दन हिलाकर बोले—"उन्हें दो दिन मिसेज दास के घर में घुसते देखा गया था। तीस हजार पाठिकाओं के निजी दस्तखत समेत एक आवेदन लेकर पाठिका-समिति का एक डेपुटेशन मिनि-स्टर के पास जा रहा है। उनका कहना है कि हम जो उप-न्यास और कहानियाँ प्रोड्यूस करते हैं वे पढ़ी नहीं जातीं।"

कुछ रुककर बराट बोले—'मैंने जाँच करके देखा है।

यह अभियोग एकदम झूठ है। हाँ, हमारे कथा-साहित्य में फ्रायड कुछ कम जा रहा है। लेकिन वह इसलिए कि हम विदेशी चीज़ ज्यादा नहीं देना चाहते। इसके अलावा होनोलूलू के प्रेसीडेण्ट, ग्वातेमाला के प्रधानमंत्री, केनिया के कमाण्डर इन चीफ, घाना के संस्कृति-सचिव सभी ने हमारे कथा-साहित्य की बड़ी प्रशंसा की है।"

राधामाधव भी मानो अब विरोधी दल पर कुपित हो उठे—"इसी से सर, समझा जा सकता है, पाठिका-समिति का अभियोग मैलिशस है। मैं आपसे कहता हूँ सर, गवर्नमेंट इन बातों पर कान नहीं देगी। क्योंकि साहित्य से गवर्नमेंट को लाभ हो रहा है।"

"कोई लाभ में लाभ है!" बराट ने बताया—"कहानी पर पाँच फी-सदी और उपन्यास पर दस फी-सदी आबकारी शुल्क लगाकर पिछले वर्ष साढ़े सात लाख रुपये प्राप्त हुए हैं।"

"धीरे-धीरे और भी ज़्यादा प्राप्त होगा।" राधामाधव ने मन्तव्य प्रकट किया।

"लेकिन सुना है, पाठिका-समिति की माँग है, किसी रिटायर्ड जज को हमारी प्रकाशित किताबों को पढ़कर देखने के लिए नियुक्त किया जाए। आप ही बताइए, भला ऐसी जाँच हाईकोर्ट का जज कर सकता है! लेकिन नगेन पाल के आमरण अनशन के पीछे भी यही माँग है। इधर गैर-कानूनी व्यापार बढ़ रहा है। लुका-छिपाकर शरद, बंकिम, प्रेमचन्द, ताराशंकर वगैरह की किताबें बेची जा रही हैं।

लिखी कार्बन कापी की किताबें चल रही हैं। और प्रिवेन्टिव डिपार्टमेंट में सिर्फ सात इंस्पेक्टर हैं। वे केस पकड़ सकते हैं ?"

"यह सचमुच चिन्ता की बात है, सर ! ऐसी किताबों स्वाद पा लेने पर फिर कोई हमारी किताबें नहीं पढ़ेगा। सब-के-सब डेन्जरस लेखक हैं, सर ! अपनी लोकप्रियता ढ़ाने की खातिर अपनी रचना में अफीम मिला देते हैं। मुज्तबा अली नाम के लेखक की एक किताब पढ़ लें तो फिर उनकी सब किताबें पढ़ने की इच्छा होती है। उनमें कोई डेन्जरस ड्रग मिली हुई है। सरकारी गेस्ट हाउस में कैमिकल-एक्जामिनेशन के लिए भेजनी चाहिए अली की ये किताबें !"

बराट बोले—"महिला इंस्पेक्टरों की ज़रूरत है, पाठिकाओं की तलाशी लेने के लिए। सबसे बड़ी अफेण्डर वे ही होती हैं। छोटी-छोटी किताबें वे दस-दस, बारह-बारह रुपयों में खरीदकर पढ़ती हैं। सर्वनाशी नशा है। हमारी किताबें नहीं खरीदेंगी। पटिया की किताब की सिर्फ पाँच कापी बिकी हैं। बाइण्डर कहते हैं फर्मा नहीं रखेंगे। फर्मे के लिए भाड़ा देना पड़ेगा। बजट में कोई प्रॉविजन नहीं है।"

राधामाधव बोले—"सब ठीक हो जाएगा, सर समस्या है इसीलिए तो गवर्नमेंट ने आप-जैसे आदमी जिम्मेदारी दी है। जब तक महिला इंस्पेक्टर न मिले तक अपने आफिस की लेडी-टाइपिस्ट और लेडी-क्लर्कों

लगा दें। दोपहर को एक-एक मोहल्ले में सरप्राइज रेड करें। शरद चटर्जी का व्यापार दो दिन में वन्द हो जाएगा।"

वराट खुश होकर वोले—"यह तो आपने अच्छी बात कही। वैरी गुड सजैशन। फिर भी लेवर ट्रबल का जो हाल है, कहीं आउट-डोर अलाउन्स क्लेम न कर बैठें। हायर स्केल भी माँग सकती हैं। डिप्टी डी० जी० (पर्सोनल) को वुला देखूं।"

राधामाधव ने अब करुण स्वर में अपनी वात उठाई,—"सर, मैं तो मिट जाऊँगा। चौदह सौ पन्नों का उपन्यास पाने के लिए एन० सी० धाड़ा ने बिना सोचे-समझे कोटेशन दे डाला था। एक रुपया दो नये पैसे पर पेज। मैं भी उसकी चालाकी समझ गया था। मैंने एक नया पैसा और भी घटा दिया। लेकिन अब, सर, सब जाता दीखता है। मिसेज दास और आप अगर इधर नज़र न करेंगे तो बाल-बच्चों को लेकर इस गरीव को सड़क पर खड़ा होना पड़ेगा।"

मिस्टर वराट वोले—"मिसेज दास मुझ से इतनी नाराज क्यों हो गईं, मुझे नहीं मालूम। मैं तो हमेशा उनसे श्रद्धापूर्वक वातें करता आया हूँ। 'मैडम' भी कहता हूँ। कहीं यह नहीं सोचें कि आदर नहीं करता। उन्होंने जब-जब वुलाया उनके घर भी गया। मैं तो सच्चा गवर्नमेंट सर्वेन्ट हूँ।"

राधामाधव वोले—"आप दोनों मुझे वचाएँ। मैं सर,

सच कह रहा हूँ। आप तो जानते हैं सर, वर्कर्स का हाउस-रेन्ट, डियरनेस, ओवरटाइम देकर इस रेट पर लिखाई नहीं कराई जा सकती। हम सर, बीच-बीच में भर्ती भर देते हैं। नायिका विमला दोपहर को अखबार पढ़ती है। इसी हिस्से में लिखा है, इसके बाद वह अखबार पढ़ने लगी। इसके बाद शुरू से आखिर तक पूरा अखबार उद्धृत कर दिया है। सबमिट करते समय, सर, आर्डिनरी दिन का आठ पन्नों वाला अखबार था, लेकिन देखा उससे भी काम नहीं चलेगा। विवश होकर स्वाधीनता-दिवस के बत्तीस पन्नों वाला सप्लिमेंट भर दिया था, सर! इससे किताब के लगभग दो सौ पन्ने बढ़ गए। कुछ विज्ञापन चलाकर उनकी कम्पनियों से भी थोड़ा-बहुत वसूल किया है, सर। लेकिन दिन की जरा गड़बड़ी हो गई। स्वाधीनता दिवस सोमवार को था और उपन्यास में विमला शनिवार का अखबार पढ़ रही होती है। अब मामला एन्टीकरप्शन में चला गया है। स्पेशल पुलिस एस्टेब्लिशमेंट के लोग भी शायद आ-जा रहे हैं।"

बराट बोले—"हूँ, प्रूफ के वक्त शनिवार की जगह सोमवार कर सकते थे।"

"उसका भी कोई उपाय नहीं, सर। उसी के बाद वे मैटिनी सिनेमा जाते हैं। नायक स्टेट-गवर्नमेंट का सर्वेन्ट है। शनिवार के अलावा वे और किसी दिन तीन बजे सिनेमा में कैसे जा सकते हैं? आडिट आखिर में सारे ह[illegible] रोक लेगा।"

से मिसेज दास के चेहरे की तरफ ताकते रह गए। मौत की सजा पाए हुए आसामी की तरह वह मानो इलेक्ट्रिक चेयर में बैठे हों और बिजली का बटन मिसेज दास के हाथ में हो। टेलीफोन उठाकर ट्रंक-काल माँगते ही मानो उनकी प्राणहीन देह ज़मीन पर लोटने लग जाएगी। और यह जल्ला-दिनी मानो अपने ऊपर बाजार का सारा सेंट, स्नो और पाउडर उँड़ेलकर आयी है। मिसेज मिनति दास मानो और भी कुछ स्लिम हो गई हैं। सिल्क की महीन किनारी वाली साड़ी पहने हैं।

"क्या देख रहे हैं ?" मिसेज दास ने तीखे स्वर में प्रश्न किया।

मेजर बराट कुछ नहीं कह पाए। सिर्फ धीरे-धीरे बोले—"घूस ?"

"हाँ !" मिनति दास ने चेहरा लटका लिया, "नहीं तो भला ऐसी बात अखबार में कैसे लिखी जाती ? आप अच्छी तरह जानते हैं अखबार किस तरह आप लोगों के ऊपर निर्भर हो गए हैं। आपसे कहानी का कोटा पाकर ही संपा-दक पत्रिकाएँ छापते हैं। नव-वर्ष के अंक के लिए उन्होंने पन्द्रह कहानियाँ माँगी थीं। आप एक उपन्यास का बल्क कोटा देकर बोले—इसी को तोड़-मोड़कर पन्द्रह टुकड़े कर लो। दुनिया में कभी किसी ने ऐसी बात सुनी है ? और एक अन्य पत्रिका के मालिक को आपने बीस कहानियों का पर-मिट दिया है। सिर्फ परमिट ही नहीं, उन्हें कहानियाँ मिल भी गई हैं।"

"दस्तखत किसने किए हैं ? मैं अभी उसको सस्पेण्ड करता हूँ !" मेजर बराट ने हुंकार कर कहा।

"देखिए !" मिसेज दास ने अब वैनिटी बैग से दो चिट्ठियाँ निकालकर बराट की ओर बढ़ा दीं।

"हैं, यह तो देखता हूँ खुद मेरे ही दस्तखत हैं। फाइल कापी पर इनीशियल किसने किए थे ? मैं अभी पी० ए० को बुलाता हूँ।"

"कोई जरूरत नहीं," मिसेज दास बोलीं—"थोड़ी देर बाद भी बुला सकते हैं। और वह जो लड़की है न, जिसे मैंने पर्सनली रिकमण्ड किया था उसको इस बार आपने परमिट नहीं दिया। बेचारी एक पत्रिका निकालती है।"

मेजर बराट बोले—"हाँ हाँ, समझा, वह लड़की। लेकिन आपको बता नहीं पाया। पिछली बार उसने धारा-वाहिक उपन्यास के परमिट का खुद उपयोग न करके ब्लैक में बेच दिया था। इसीलिए इस बार जरा सावधानी से..."

"आप लोग सब कुछ कर सकते हैं। गल्प के देश भारत में भी आप लोगों ने गल्प का अभाव पैदा कर दिया है। अन्नपूर्णा को आपने भिखारिणी बना डाला है। पहले इस देश में इतनी कहानियाँ लिखी जाती थीं कि सम्पादकों का दम फूल जाता था। छाप नहीं पाते थे। और अब आपकी कृपा से देश-भर में गल्प के लिए हाहाकार मच गया है।"

"नहीं, मैडम !" बराट ने डरते-डरते निवेदन किया—"टोटल प्रोडक्शन नहीं घटा है। लेकिन प्रायोरिटी कन्ज्यूमर्स

इतना ज़्यादा कोटा ले चुके हैं कि अब हाथ में कोई स्टॉक नहीं है। तिस पर विशेषांकों का मौसम आ पहुँचा है। न जाने इस बार क्या होगा? इसके अलावा उस बार आपने हुक्म दिया—बिना जाँचे कोई कहानी न भेजी जाए। स्टैण्डर्ड स्पेसिफिकेशन के बारे में आडिट के साथ बहस चल रही है। वे कहते हैं रुपया टैक्स-पेयरों का है। रिजैक्ट कहानियों का हर्जाना कौन देगा? नेशनल स्टैंडर्ड इन्स्टीट्यूट से भी तो लिखा-पढ़ी चल रही है।"

मिनति दास ने किसी बात पर ध्यान नहीं दिया। बैग में से छोटा-सा आईना निकाला और रूमाल से ओठ पोंछते-पोंछते बोलीं—"ट्रंक-काल बुक कीजिए!"

कुछ क्षण पत्थर की तरह स्तब्ध रहकर अन्त में मेजर बराट बोले—"मिसेज दास, ये तो टीदिंग ट्रबुल हैं। आगे सब ठीक हो जाएगा। छोटे बच्चों के दाँत निकलने के समय कैसी हालत हो जाती है, आप तो जानती हैं! मिनति देवी, थोड़ी कॉफी पिएँगी!" भर्राए गले से मिस्टर बराट बोले।

मिसेज दास मानो इस पुराने स्वर को सुनकर कुछ नरम हो गईं—"कॉफी! खैर मँगाइए। लेकिन एक-एक पल मानो मैं ज़हर पी रही हूँ। जहाँ जाती हूँ, वहीं मुझी को जवाबदेही करनी पड़ती है।"

"छी-छी, ज़हर आप क्यों पिएँगी, मिनति देवी! अगर किसी को ज़हर पीना ही पड़ा तो मैं पीऊँगा! मैं लिटरेचर का प्रथम डाइरेक्टर जनरल हूँ।"

मिनति दास को विदा करके मेजर बराट चुपचाप बैठे रहे। सारी दुनिया मानो आज उनसे दुश्मनी कर रही है। एक दिन सब उनकी तरफ थे। आज कोई नहीं है।

एक दिन ऐसा भी था जब मेजर बराट ने कहा था—"काम बहुत बढ़ता जा रहा है।"

मिनति दास बोली थीं—"आफिस में इतनी देर तक न रहा करें। तबीयत बिगड़ जाएगी।"

मेजर बराट बोले—"किधर-किधर देखूं! स्टाफ, कंट्रैक्टर, समिति, प्रेस, आबकारी डिपार्टमेंट। ऊपर से अगर पाठक-पाठिकाएँ भी डिस्टर्ब करें तो मैं कहीं का न रहूँगा।"

मिसेज दास वैनिटी बैग को गोद में लेकर उससे खेलते-खेलते बोलीं—"पाठक-पाठिकाओं के बारे में परेशान न हों। शोर मचाना तो उनकी आदत है। शरत चटर्जी, बंकिम चटर्जी तक को वे हमेशा जलाते आए हैं। उन्हें हरगिज पास न फटकने दें। उनका नशा गांजा-अफीम के नशे की तरह है। उपन्यास-कहानी की किताबें पढ़े बिना कोई उपाय नहीं है।"

"लेकिन मिनिस्टर?" बराट ने बुद्धू की तरह सवाल किया।

स्निग्ध मुसकराहट से बेचारे बराट को आश्वस्त करके मिसेज दास बोलीं—"मैं किसलिए हूँ? आपकी पोस्ट में

एक्स्टेंशन नहीं होगा। मिसेज दास मुझसे नाराज क्यों हो गईं भला? वही तो सब करा रही हैं।"

"क्या आपने कभी उनका अपमान किया था?"

"नहीं तो! प्रोस्पैक्टिव डिप्टी मिनिस्टर का अपमान करूँ, मैं इतना बड़ा मूर्ख नहीं हूँ। मिसेज दास ने जब जो कहा, मैंने फौरन किया है।"

राधामाधव इस बार रुआँसे होकर अचानक बराट के हाथ पकड़कर बोले—"सर, इस वक्त हम दोनों ही विपद में हैं। इस वक्त रोग दबाकर रखने की चेष्टा न करें, सर। अगर कोई ऐसी बात हो जो अभी तक आपने मुझे न बताई हो तो बता दें, सर। मैं आपकी सहायता करने की चेष्टा करूँगा।"

ट्रैजिडी के नायक की भाँति करुण स्वर में बराट बोले—"आपको तो सभी कुछ बता चुका हूँ। फिर भी एक बार सोच देखूँ।"

"जरा अच्छी तरह सोच देखें, सर। कब से मिसेज दास एकदम बदली हैं?"

सारे अतीत का हिसाब मेजर बराट सावधानी से रि-आडिट करने लगे। फिर धीरे-धीरे बोले—"उसी दिन सवेरे से, जिस दिन सवेरे मैंने उनके रात के सवाल का उत्तर दिया था। लगता है तभी से वह मुझे ज़हरीली नजरों से देखने लगी हैं।"

राधामाधव बोले—"आपसे क्या सवाल किया था?"

मेजर बराट सिर खुजलाते हुए बोले—"मिनिस्टर के-

से ढंग से ज़रूर उन्होंने सवाल पूछा था। मिसेज दास ने रात को अचानक टेलीफोन पर प्रश्न किया था। मैं उस समय बिस्तर पर लेटा हुआ था। मिसेज दास बोलीं—मैं भी बिस्तर पर लेटी हुई हूँ। और कोई सुने तो सोचेगा यह मिसेज दास का अन्याय था। जब एक आदमी लेटा हुआ है उस वक्त उसे डिस्टर्ब करना उचित नहीं है। लेकिन हम माइन्ड नहीं करते, क्योंकि हम जानते हैं कि हम चौबीस घंटे के सर्वेन्ट हैं। और बहुत-सी बातों के बाद मिसेज दास अचानक बोलीं—आप से एक बात पूछनी थी। खैर छोड़ो, फिर कभी पूछूँगी।"

मैं बोला—"नहीं-नहीं, आप अभी पूछें, मिनति देवी! नहीं तो मुझे नींद नहीं आएगी।"

मिनति दास प्रश्न करने में इतनी झिझक क्यों रही थीं, पता नहीं। अटकते-अटकते बोलीं—"आपका मन आजकल हर वक्त कहाँ लगा रहता है?"

अभिज्ञ रहस्यभेदी डिटेक्टिव की भाँति आगे झुक कर इस बार राधामाधव ने बराट से प्रश्न किया—'आपने क्या उत्तर दिया?"

"मेरी पर्सनल फ़ाइल उस समय एच० एम० की टेबिल पर थी। मैं रात-भर सोचता रहा। सवेरे तड़के मिसेज दास को जताया—खूब सोच देखा, मैडम! आफिस के अलावा मेरा मन और कही नहीं है। मैं सवेरे, दोपहर, तीसरे पहर, यहाँ तक कि रात-भर आफिस में ही पड़ा रहता हूँ। खाली देह मन को आफिस में छोड़कर बिस्तर पर सोने आती है।"

राधामाधव का चेहरा अब ढाई सौ पावर के बल्ब की तरह चमक उठा। बोले "मैं अपने लिए और चिंता नहीं करता, सर। पहली अप्रैल की शाम को हमारे फंक्शन में आपको ज़रूर आना होगा।"

"मुझे ले जाने से आप लोगों का कोई लाभ नहीं होगा। बल्कि आप मिसेज दास को ले जाइए। उसी दिन वह शायद कोई हलचल-भरी घोषणा करेंगी। राजधानी से अब तक ट्रंक-काल पर शायद सब बातें हो चुकी हैं। पहली अप्रैल को आपकी पार्टी में जाने लायक मेरा मुँह नहीं रहेगा।"

राधामाधव बोले—"अच्छी बात है। हम मिसेज दास को भी ले जाएँगे, लेकिन मिसेज दास को राजी कराने की जिम्मेदारी आपकी है। लेकिन आपको भी सभा में आना होगा, सर। हम कोई बात नहीं सुनेंगे!"

मेजर बराट की आँखें छलछला उठीं। किसी तरह बोले—"राधामाधव बाबू, आपको मैं प्यार करता हूँ। आप को एक तरह से मैंने बड़ा किया है। एक गुप्त बात आज कहे रखता हूँ। आप शायद उसी दिन सुनेंगे, मुझे हटा दिया गया है। शायद उसी दिन नए डी० जी० से आपकी भेंट हो जाएगी"

राधामाधव की आँखें भी छलछला उठीं, लेकिन कुछ बोलना चाहने पर भी बोल न पाए। कुछ संकोच हुआ। अन्त में जल्दी से एक स्लिप लिखकर मेज़ पर रखकर चले गए।

राधामाधव का चेहरा अब ढाई सौ पावर के बल्ब की तरह चमक उठा। बोले "मैं अपने लिए और चिंता नहीं करता, सर। पहली अप्रैल की शाम को हमारे फंक्शन में आपको ज़रूर आना होगा।"

"मुझे ले जाने से आप लोगों का कोई लाभ नहीं होगा। बल्कि आप मिसेज दास को ले जाइए। उसी दिन वह शायद कोई हलचल-भरी घोषणा करेंगी। राजधानी से अब तक ट्रंक-काल पर शायद सब बातें हो चुकी हैं। पहली अप्रैल को आपकी पार्टी में जाने लायक मेरा मुँह नहीं रहेगा।"

राधामाधव बोले—"अच्छी बात है। हम मिसेज दास को भी ले जाएँगे, लेकिन मिसेज दास को राजी कराने की जिम्मेदारी आपकी है। लेकिन आपको भी सभा में आना होगा, सर। हम कोई बात नहीं सुनेंगे!"

मेजर बराट की आँखें छलछला उठीं। किसी तरह बोले—"राधामाधव बाबू, आपको मैं प्यार करता हूँ। आप को एक तरह से मैंने बड़ा किया है। एक गुप्त बात आज कहे रखता हूँ। आप शायद उसी दिन सुनेंगे, मुझे हटा दिया गया है। शायद उसी दिन नए डी० जी० से आपकी भेंट हो जाएगी"

राधामाधव की आँखें भी छलछला उठीं, लेकिन कुछ बोलना चाहने पर भी बोल न पाए। कुछ संकोच हुआ। अन्त में जल्दी से एक स्लिप लिखकर मेज़ पर रखकर चले गए।

स्लिप पर अब तक मेजर बराट की नजर नहीं पड़ी थी। जब पड़ी उस समय रात के नौ बजे थे। स्लिप पढ़ते ही मेजर बराट चौंक उठे। अचानक मानो उनकी दुनिया में भूचाल आ गया। समुद्र के अतल गर्भ से उनकी आंखों के सामने कोई नया महाद्वीप उदित होने लगा। उस महाद्वीप को वह इतने दिनों तक आविष्कृत नहीं कर पाए थे। नौकरी करते-करते सचमुच उनके भेजे में और कुछ नहीं बचा था। लेकिन राधामाधव देखते ही सब कुछ समझ गए। और उन्हें जता गए हैं। आहा! राधामाधव! भगवान उसका कल्याण करें।

मेजर बराट ने न जाने क्या सोचा—स्लिप फिर पढ़ी। फिर कपड़े-लत्ते पहनकर बालों पर ब्रुश फेरकर निकल पड़े।

घंटी की आवाज सुनकर दरवाजा खोलने के लिए जो आयीं वह खुद मिनति दास थीं। आज शायद कुछ जल्दी ही लेटने की सोच रही थीं। बराट को इस समय देखकर मिसेज दास अवाक हो गईं। कुछ सकपकाकर बोलीं—"इस वक्त ?"

"कल जरा व्यस्त रहूँगा, इसीसे आज ही आना पड़ा।"

मिसेज दास साड़ी का आँचल ठीक करके बोलीं—"बहुत देर में आए हैं। आपके मिनिस्टर से अभी-अभी

बातचीत हो गई। उन्हें सब बता दिया है। सब कुछ कहने को मैं बाध्य हो गई थी।"

लेकिन आज विश्वनाथ बराट को कोई डर नहीं लगा। और किसी दिन यह खबर मिलती तो शायद फेण्ट हो जाते। आज बोले—"मैं उसके लिए नहीं आया। मैं जरा बैठ सकता हूँ।"

मिनति दास भी अवाक हो गई। आज मानो कोई और बराट बात कर रहा है। बराट क्या आज ड्रिंक करके आया है? लेकिन मेजर बराट तो ड्रिंक नहीं करते। सोफे पर बैठकर अनुमति के बिना ही मेजर बराट ने सिगरेट सुलगाई। धीरे-धीरे बोले—"मैं आया हूँ पहली अप्रैल के बारे में।"

मिनति दास सामने के सोफे पर आकर बैठ गईं। बराट बोले—"उस दिन शाम को साहित्य के ठेकेदार, कहानी समवाय, प्रेस वाले सब मिलकर आपके लिए एक अभिनन्दन का आयोजन कर रहे हैं। आपको उस दिन उपस्थित रहना होगा।"

मिनति दास जूड़े में से काँटे निकालते-निकालते बोलीं—"इसी के लिए सरकार का पेट्रोल फूंककर मेरे घर तक चले आए हैं? यह तो फोन पर भी बता सकते थे। इसके अलावा उस दिन मुझे समय भी नहीं होगा।"

मेजर बराट बोले—"आप से चर्चा किए बिना ही कार्ड छपाए जा रहे हैं।"

"कार्ड कौन छपा रहा है?" मिनति दास ने क्रुद्ध

स्वर में प्रश्न किया।

"मैं !" मेजर बराट के उत्तर से मिनति दास चौंक उठीं। लेकिन विस्फोट नहीं हुआ। किसी अज्ञात कारण से वह शान्त हो गईं।

मेजर बराट ने चारों ओर ताककर देखा, आसपास कोई नहीं है। बस एक दीवार की घड़ी को छोड़कर मानो आज और कोई सजीव प्राणी उन दोनों के बीच नहीं है। परम विश्वास के साथ वह बोले—"अगर कहूँ सिर्फ इसी लिए आया हूँ तो झूठ होगा, मिनति देवी !"

"इतने ऊँचे अफसर होकर भी आप झूठ बोलते हैं !"

मेजर बराट को जरा भी डर नहीं लगा—'हाँ, मिनति देवी, और भी एक दिन आपसे झूठ बोला था। तभी से भीतर ही भीतर जला जा रहा हूँ।"

"झूठ, मुझसे ?" मिनति दास उत्तेजना में हाँफने लग गईं।

"हाँ, एक दिन गहन रात में आपने जानना चाहा था, मेरा मन हर वक्त किसमें डूबा रहता है। मैंने कहा था: नौकरी में। यह बिलकुल झूठी बात थी।"

"तो फिर किसमें ?" मिनति दास का चेहरा मानो डरी हुई हरिणी की भाँति फक्क हो गया हो। उत्तेजना के कारण वह ज़ोर-ज़ोर से साँस ले रही थीं। उनकी छाती फूल-फूल उठती थी।

मेजर बराट का व्यग्र हृदय एक बार मानो थर-थर

काँप उठा। मृगनयनी मिनति की आँखों की ओर लुब्ध नयनों से देखते हुए वह द्विधाहीन चित्त से बोल पड़े—"तुममें !"

इसके बाद का सारा वर्णन देना सम्भव नहीं है। रात के दस बजे किसी महिला के घर में झाँकने वाले को सभी अवश्य शालीनता-विरोधी समझेंगे।

साहित्य-परामर्श-समिति की चेयरमैन, भावी उपमंत्री, समाज-सेविका मिसेज दास पहाड़ी नदी की बाढ़ में न जाने कहाँ बह गई। उनका जो अंश पड़ा रह गया उसका नाम है मिनति। वह बस घुट-घुटकर रोने लगीं।

मिनति को शिथिल आलिंगन में आबद्ध करके विश्वनाथ बोले—"छीः, भला रोते हैं!"

रोते-रोते ही मिनति बोली—"तुमने मुझे इतने दिन कष्ट क्यों दिया?"

विश्वनाथ बराट अनभ्यस्त हाथों से मिनति को अपने पास खींचकर दुलार करते हुए बोले—"तुम क्या सिर्फ मुँह के वचन ही सुनती रही हो मिनति, मेरे हृदय की बात नहीं सुन पायीं?"

आँखें पोंछते-पोंछते मिनति बोलीं—"तीसरे पहर जब मुलाकात हुई थी तभी क्यों नहीं बताया? अब तो मैं फोन कर चुकी हूँ।"

"उससे क्या आता-जाता है, मिनू। नौकरी जाती हो, जाए। मेरी पेंशन तो रहेगी।"

मिनू फिर रोने लगीं—"यह तुमने किया क्या?"

कृतज्ञ विश्वनाथ इस हालत में मित्र की बात नहीं भूले। मिनू को निविड़ आलिंगन में लेते हुए बोले—"राधा-माधव के बारे में ही मैं चिन्तित हूँ।"

रोते-रोते ही मिनू बोलीं—"मैं सुन चुकी हूँ। उसने ठीक ही किया है। राष्ट्रीय हित के ही लिए उसने स्वाधीनता-दिवस के अखबार का उपयोग किया है।"

पहली अप्रैल को शुभ संवाद की घोषणा हुई थी। राजधानी से माननीय मन्त्री भी पधारे थे। डी० जी० एल० की अव्यवस्था के लिए सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेकर श्रीमती मिनति दास ने उपदेष्टा कमेटी के चेयरमैन पद का त्याग कर दिया। माननीय मन्त्री ने बताया, साहित्य की उन्नति और साहित्य के व्यवसाय के लिए एक कार्पोरेशन की स्थापना हो रही है। इस अर्द्ध-सरकारी लिमिटेड कार्पोरेशन के चेयरमैन होंगे नगेन पाल। तालियों की गड़-गड़ाहट के बीच उन्होंने बताया कि इस कम्पनी के मैनेजिंग डायरेक्टर मेजर बी० एन० बराट नियुक्त हुए हैं।

समाचार एजेन्सी की एक खबर से कुछ दिनों बाद यह भी पता चला कि मिसेज मिनति बराट ने शारीरिक कारण से समाज-सेवा एवं राजनीति से कुछ समय के लिए अवकाश ले लिया है। विवाहोपरान्त किसी सहज-बोध्य कारण से वह कम-से-कम अगले आठ-नौ महीनों तक सभा-समितियों में योगदान नहीं कर पाएँगी।

अथ पात्री कथा
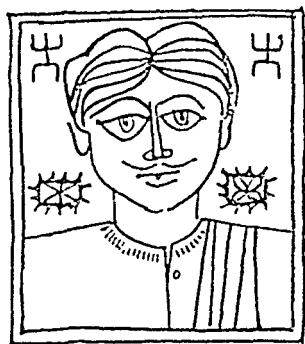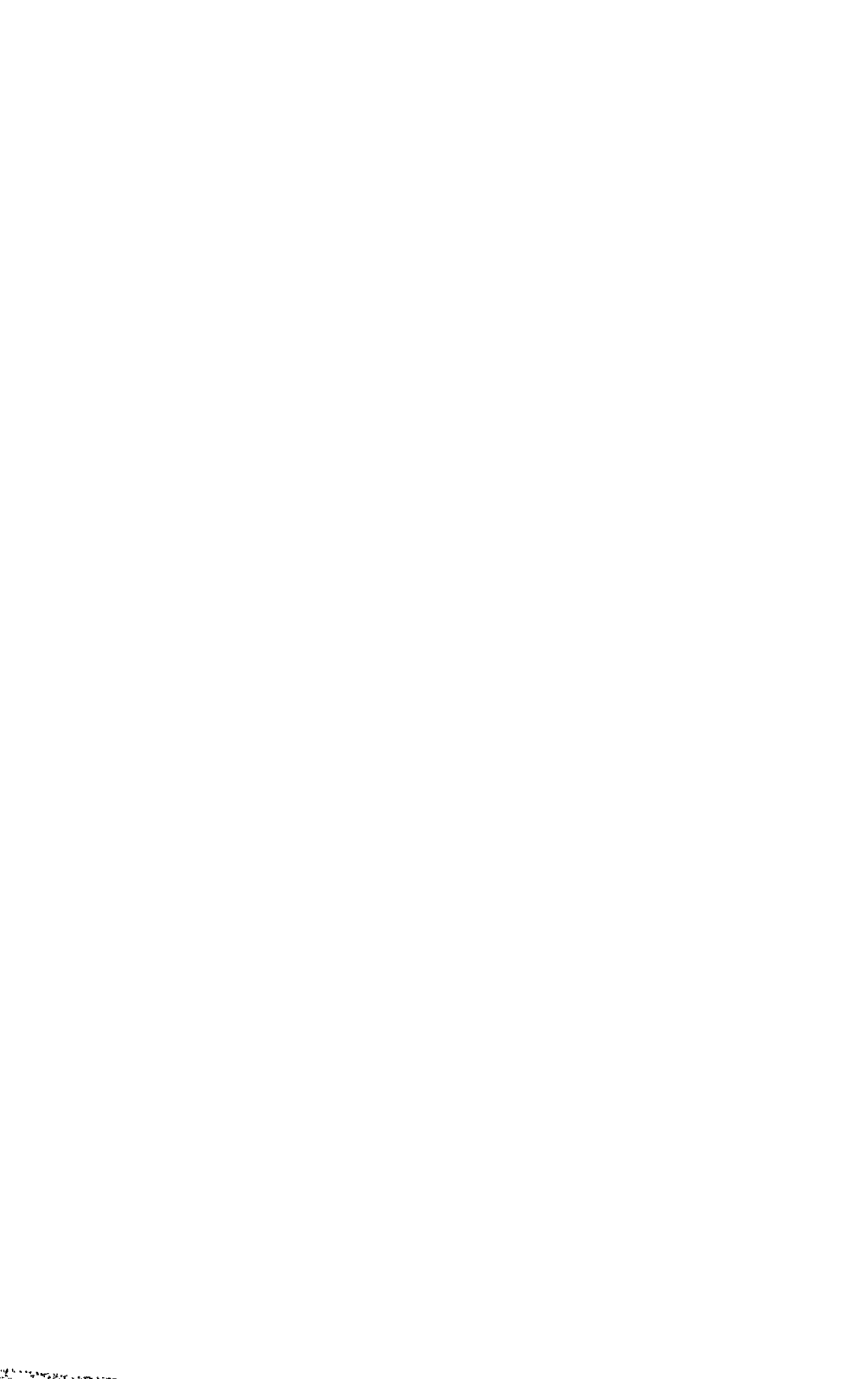
अत्र शुद्ध भाषा का प्रयोग करना होगा। शुद्ध भाषा के अति-रिक्त और किसी भाषा में इन शिष्ट जनों की कथा कहना सम्भव नहीं है।

किन्तु पहले किस्से-कहानियों के शौकीनों को सावधान कर देना आवश्यक लगता है। वे कृपया जान लें कि सुनेत्रा देवी से सम्बन्धित मेरी इस रचना में किसी कहानी का संधान नहीं मिलेगा। ऐसा नहीं है कि अतीत के कुछ दुर्बल मुहूर्त्तों में मैंने दो-एक कहानी-उपन्यास न लिखे हों, लेकिन अब समझ में आ गया है कि इस दरिद्र देश में कथा-साहित्य की विलासिता हमें शोभा नहीं देती। देश के संकट के इस मुहूर्त्त में बना-सँवारकर किसी चीज़ के प्रचार की चेष्टा अनुचित है।

कुछ समय से आडिट-विभाग के श्री नगेन चाकलादार को केन्द्र करके सुनेत्रा देवी के कर्म-जीवन में जो अप्रीतिकर अर्थनीतिक घटनाएँ घटती रही हैं वे ही मेरी विवेचना का

विषय हैं। ताना-वाना बुनकर कहानी लिखने में मैं अपने मूल्यवान समय का नाश करने के लिए अब प्रस्तुत नहीं हूँ। किस प्रकार अपनी प्रिय जन्मभूमि इस वम्बागढ़ के कोटि-कोटि जन-साधारण को देश-प्रेम के प्रति उद्बुद्ध किया जा सकता है, किस प्रकार उन्हें नैतिक तथा मानसिक अधः पतन के गर्त से निकालकर पुनः सन्मार्ग पर लगाया जा सकता है, आज से बस यही मेरी चिन्ता का विषय है। देश में विभिन्न दिशाओं में जो उन्नति हो रही है, अनर्गल की वर्जना करके मैं केवल उसी का अपनी मातृभाषा में सहज और सरल रीति से वर्णन करूँगा। अत्यन्त प्राचीन काल से इस देश में असंख्य कथाएँ लिखी गई हैं, अब यदि कुछ दिनों के लिए उत्पादन वन्द रहे तो महाभारत भ्रष्ट नहीं हो जाएगा।

देश के नेताओं की इस बात से मैं सहमत हूँ कि जन-साधारण के समक्ष सर्वदा निषेधात्मक चित्र अंकित कर हम राष्ट्र का अपकार कर रहे हैं। सर्वशुद्ध भाषा में जिसे 'पॉज़िटिव आइडियलिज़्म' कहते हैं वह सर्व-साधारण की आँखों के आगे बार-बार रखा जाए, आज इसकी विशेष आवश्यकता है। और मैं इसी उद्देश्य से सुनेत्रा देवी के कर्म और साधना का यह सामान्य इतिवृत्त लिखने बैठा हूँ।

सुनेत्रा देवी ने मुझे स्वयं ही बताया था कि पब्लिसिटी नाम की वस्तु उन्हें तनिक भी पसन्द नहीं। तथापि उनके जीवन-वृत्तान्त का पाठ करके यदि देशवासियों का, विशेष रूप से तरुणों का कोई उपकार हो और जिस योजना के

पति की चर्चा चल ही पड़ी है तो सुनेत्रा देवी के अतीत के सम्बन्ध में जो तथ्य कान में आए हैं उन्हें कह डालना ही उचित है। जिनसे मैंने ये संवाद एकत्र किए हैं वह मेरी परम पूजनीया मौसी और सुनेत्रा की बालसखी हैं। आज भी उनमें यथेष्ट हार्दिकता विद्यमान है। मैंने जो सुना है उसे निष्कपट रूप से वर्णित करता हूँ। किन्तु सत्य-निर्धारण के लिए पाठक-पाठिकाएँ आवश्यक सावधानी का अवलम्बन लें, यही कामना है।

महत्त्वाकांक्षा ही महत् की आधारभूमि है। जब वे बालिका थीं तब सुनेत्रा देवी के मन में ज्ञानार्जन की महत्त्वाकांक्षा थी। किन्तु परीक्षक जाति के असुरों ने बाधा उत्पन्न कर दी। इण्टर नामक परीक्षा ने उन्हें कई बार आशा दिलाकर भी अन्ततः निराश कर दिया।

इस क्षणिक हताशा के मुहूर्त्त में ही सुनेत्रा अपने घटनाबहुल जीवन की अन्यतम भूल कर बैठीं। पूर्वोल्लिखित अपनी बालसखी के निकट वह गोपन रूप से अपना मनोभाव प्रकट करती हुई बोलीं—"सब गुड़-गोबर हो गया। मुझे अब कुछ अच्छा नहीं लगता। इससे तो ब्याह हो जाए, सो ही अच्छा।"

अपने पाठक-पाठिकाओं के निकट मेरा विनम्र अनुरोध है कि वे अपने मित्रों से, चाहे वे कितने ही विश्वासभाजन क्यों न हों, अपने मन की बात सम्पूर्ण रूप से प्रकट न करें। थोड़ी-बहुत मन में भी रहने दें, नहीं तो सुनेत्रा देवी की-सी दशा होगी। विश्वासघातिनी सहेली ने सुनेत्रा का आत्मोद्-

गार गुप्त रूप से सुनेत्रा-जननी के कानों में पहुँचा दिया। फिर अपनी भीता एवं त्रस्ता अर्द्धांगिनी के दबाव से निरुपाय होकर प्रख्यात विदेशी कम्पनी के विभागीय मैनेजर जे० पी० मुखर्जी महोदय ने अत्यन्त अल्प समय में ही मुन्सिफ पद्मलोचन चट्टोपाध्याय के साथ अपनी कन्या के विवाह की व्यवस्था कर डाली।

यद्यपि यह बहुत दिनों पहले की बात है जब पब्लिक और प्राइवेट नामक सैक्टरद्वय ऐसे सर्वजन विदित नहीं हुए थे, तथापि उस युग में भी इन सैक्टरों का सम्पर्क विशेष मधुर नहीं था। फलस्वरूप शीघ्र ही द्वन्द्व शुरू हो गया।

प्राइवेट सैक्टर की कन्या सुनेत्रा पब्लिक सैक्टर के कर्मचारी पद्मलोचन को पर्याप्त सम्मान नहीं दे सकी। प्रधान कारण था वेतन का परिमाण। अपने पितृदेव के वेतन से उसकी तुलना करने पर सुनेत्रा का मस्तक लज्जा से नत हो आता था। इसके बाद जब सुनेत्रा को संवाद मिला कि अदालत के पेशकार नामक राजपुरुष, माननीय न्यायाधीश अर्थात् पतिदेव की अपेक्षा अधिक अर्थोपार्जन करते रहते हैं तो उनका क्षोभ और भी बढ़ गया।

इस सम्बन्ध में पद्मलोचन की दृष्टि आकर्षित करने का कोई शुभ फल नहीं हुआ। मुन्सिफ महोदय अदालत की नजीर के सहारे परिचालित होते थे। इसीलिए नगरवासिनी भार्या को उन्होंने सर्वशुद्ध भाषा में बता दिया कि यह नजीर अंग्रेज़ों के युग के आदि से ही चली आ रही है। तनिक अदालती ढंग से पत्नी को उन्होंने यह भी जता दिया कि विदेशी

व्यापारी के स्नेह से पुष्ट अपने पितृदेव के धन-कोष की अपने मुन्सिफ पतिदेव की तिजोरी से तुलना करना रीति-विरुद्ध ही नहीं, रुचि-विरुद्ध भी है।

प्राइवेट सैक्टर कुछ क्षणों तक निस्तब्ध रहा। फिर उसने पब्लिक सैक्टर की अव्यवस्था के विरुद्ध अभियोग लगाना आरम्भ किया। मास पर मास इस स्वल्प आय का एक सिंह अंश धनादेश द्वारा अकर्मण्य भाइयों की उच्च शिक्षा के लिए भेजने के औचित्य पर सुनेत्रा देवी ने प्रश्न-चिह्न लगाया। मुन्सिफ पति ने सफाई में कहा कि रुपये भेजने के बाद भी साधारण दैनिक प्रयोजनों को पूरा करने में कोई कष्ट नहीं होता। तब अपर पक्ष ने जीवन-बीमा का प्रश्न उठाया। पद्मलोचन का मूल्यवान जीवन मात्र चार हज़ार रुपयों की सीमा में बँधा है, यह सुनकर स्वतःस्फूर्त हँसी सँभालने में सधवा सुनेत्रा को प्रायः दस मिनट का समय लगा। तुलना नाम की वस्तु अस्वास्थ्यकर और अप्रीतिकर जानते हुए भी सुनेत्रा ने निवेदन किया कि उसके पितृदेव के ड्राइवर हाराधन का साधारण जीवन भी पद्मलोचन की पॉलिसी से दुगुने मूल्य के बीमे से बँधा है। इस अशान्तिपूर्ण वार्त्ता-चक्र में जिस समस्या ने 'उष्ट्र पृष्ठ को भंग करने वाले अन्तिम तृण-खण्ड' का काम किया वह थी मुफस्सिल के जीवन की समस्या। जिन सृष्टिकर्त्ता ने दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता जैसे शहरों की सृष्टि की है उन्हीं के हाथ से बिजली की रोशनी और फ्लश की टट्टी से सर्वथा विहीन मुफस्सिल नामक वस्तु किस प्रकार निर्मित हुई, यह सुनेत्रा नहीं समझ

पातीं। अतएव झगड़ा-झंझट चलने लगा।

बेचारे पद्मलोचन अदालत में सिंह न्यायाधीश के नाम से परिचित होने पर भी घर में अभागे बकरी के बच्चे की तरह असहाय जीवन-यापन करने लगे। तिक्त और विरक्त पद्मलोचन अन्ततः जीवन-बीमा का परिमाण पहली किस्त में ही बढ़ाकर २५००० करने पर बाध्य हुए एवं परवर्ती वर्ष में वेतनवृद्धि के साथ-साथ बीमा-राशि की भी वृद्धि हुई और वह ५०,००० पर जा पहुँची। निकम्मे भ्राता-गण अन्तर्वर्ती काल में वायु का सेवन और दिशा-निर्धारण करते रहे। पद्मलोचन सहज-बोध्य कारण से निरतिशय मानसिक वेदना के बीच दिन काटने लगे। आत्मीयों की कुशल पूछना बन्द कर दिया। व्यक्तिगत पत्रों में केवल जीवन-बीमा कम्पनी के नोटिस ही पाते रहने के अभ्यस्त हो गए। जो भी समय बचता पद्मलोचन अपने सहकर्मी सह-जज श्री हरिहर राय के घर पर व्यतीत करते थे। हरिहर भी कोई विशेष सुख-शान्ति से रहते हों, ऐसा नहीं। उनकी पत्नी चिर-रुग्णा थीं, किन्तु उनके पेशकार समझदार थे। आपद-विपद में अपने आप गुप्त रूप से आर्थिक सहायता करते थे।

मेरे वर्तमान प्रबन्ध के लिए ये विवरण अनावश्यक हैं किन्तु सुनेत्रा देवी की पृष्ठभूमि नामक वस्तु परिस्फुट करने के लिए ये लिख डाले हैं। इसी दिशा में कुछ दिन और चलने पर सुनेत्रा और पद्मलोचन की दाम्पत्य-वेदना को लेकर शायद कोई कथा पूरी की जा सकती, किन्तु तब इस

प्रबन्ध की रचना का सुयोग न आता। कहने में मुझे लज्जा नहीं है, देश के बृहत्तर हित की बात सोचकर प्रायः मन में आता है, पद्मलोचन की आकस्मिक मृत्यु ईश्वर की इच्छा से ही घटी थी। वह जो कुछ भी करते हैं भले के लिए ही करते हैं।

पाठक-गण के निकट मेरा अनुरोध है: वे कृपया यह न सोचें कि जीवन-बीमा का गुणगान करने के लिए ही बड़े कौशल से मैंने इस रम्य रचना का जाल बिछाया है। किन्तु सत्य का सामना करते हुए मैं यह कहने को बाध्य हूँ कि जीवन-बीमा के वे ५०,००० रुपये (बोनस समेत ५२,३३३ रुपये २५ पैसे) बड़े काम के सिद्ध हुए।

सुनेत्रा देवी ने पति की मृत्यु के उपरान्त उस रुपए के प्रधान अंश से पाकिस्तान पलायनोद्यत किसी मुसलमान सज्जन की प्रासादोपम अट्टालिका प्रायः जल के मूल्य पर खरीद ली थी। और जब उस अट्टालिका ने फ्लैट-समूह में रूपान्तरित होकर १००० रुपये महीने की आय का मार्ग मुक्त कर दिया, तभी से सुनेत्रा देवी ने देश को और देश की सेवा को अपना उत्सर्ग करने का निश्चय किया था।

सुनेत्रा देवी पारिवारिक झमेले से मुक्त हो चुकी हैं। अब वह दिखा देंगी कि प्राच्य नारियाँ क्या कर सकती हैं। गार्गी, मैत्रेयी, सरोजिनी नायडू तथा विजयलक्ष्मी पंडित को जन्म देकर ही भारत-जननी निश्शेष नहीं हुई, सुनेत्रा देवी जैसी नारियाँ भी हैं।

अब तक जो कुछ लिखा है, उसे आप बर्नार्ड शा महोदय

के नाटक की भूमिका अथवा शास्त्रीय संगीत का आलाप कह सकते हैं। मेरे प्रबन्ध का, अर्थात् सुनेत्रा देवी के समस्या-बहुल जीवन का प्रारम्भ यहीं से होता है।

कई वर्षों तक निचले स्तर की देश-सेवा करने पर सुनेत्रा देवी की समझ में आया कि घर में बैठे-बैठे बस मक्षिका-मर्दन ही हो सकता है। इस तरह चींटी की चाल चलने पर तो कभी भी उस स्थल पर नहीं पहुँचा जा सकता जिसे सर्वशुद्ध भाषा में 'टॉप' कहते हैं। जो बुद्धू होती हैं वे सीढ़ियाँ चढ़ते-चढ़ते मर जाती हैं, जो बुद्धिमती होती हैं वे लिफ्ट में सवार होकर उत्तुंग अट्टालिका की छत पर चढ़ जाती हैं और ऊपर से लिफ्टमैन का सलाम भी पाती हैं।

सुनेत्रा देवी समझ गईं कि सिर्फ सेवा करने से काम नहीं चलेगा। मस्तक के भीतरी भाग में घृत नामक जो वस्तु है, उसका भी सम्यक् सद्-व्यवहार करना होगा। पाठकगण जान लें अपनी जिस योजना के लिए सुनेत्रा देवी आज समस्त देश में सुपरिचित हैं उसका अंकुर इसी रूप में प्रकट हुआ था।

सुनेत्रा देवी की यह जगत-विख्यात योजना और इ रूपायन में उनके आजीवन-त्याग की कहानी देश-सारे लोगों को सुपरिचित है। किन्तु मैं उससे भी कुछ

जानता हूँ, क्योंकि एक वार उन्होंने अपनी आत्म-जीवनी रचने की इच्छा की थी। उसी उद्देश्य से उन्होंने मेरी मौसी के माध्यम से मेरे साथ सम्पर्क स्थापित किया था।

अपने फ्लैट में मुझे बुलाकर उन्होंने कहा था—"यों तो मैं खुद भी लिख सकती हूँ, लेकिन मेरी राइटिंग खराव है और स्पेलिंग कमज़ोर। फिर हम बिज़ी आदमी हैं। ऑटो-वायोग्राफी लिखने में समय वरवाद करने से काम नहीं चलेगा। जिस तरह मेरे पास सेक्रेटरी है, स्टैनो है, क्लर्क है, उसी तरह आप भी रहेंगे।"

सुनेत्रा देवी ने कहा था—"नए ढंग की होनी चाहिए, समझे! जीवन में जो मेरी तरह सफल होना चाहते हैं उनके मन में नई योजना होना ज़रूरी है। देश अव आज़ाद है। आगे वढ़ने के अवसरों की कोई कमी नहीं है। ऐसे में भी जो तरक्की न कर सके वह वस अपने को ही दोष दे सकता है।"

सुनेत्रा देवी की योजना का विवरण दिया जा सकता है। विश्व के अनेक युगान्तरकारी आविष्कारों की भाँति इस योजना का आरम्भ भी वड़े साधारण रूप में हुआ था।

छत पर चढ़कर सुनेत्रा एक दिन अपने भविष्य के सम्वन्ध में ज़मीन-आसमान के कुलावे भिड़ा रही थीं। प्रायः तीन साल से वे देश-सेवा कर रही थीं, मीटिंगों में जाती थीं। धर्मार्थ चिकित्सालय से घनिष्ठ रूप से सम्वद्ध थीं। निस्संतान होने पर भी मातृ-मण्डल समिति की संयोजिका थीं। सवेरे सात से लेकर रात साढ़े दस वजे तक का समय

बस देश की बातें रटते ही कटता था। फिर भी स्वास्थ्यहीना महिलाएँ अपने उससे भी अधिक अस्वस्थ मन से सुनेत्रा देवी की टीका-टिप्पणी करती थीं। वे उनके केश-विन्यास का तीव्र विरोध करतीं। विधवा की सजने-सँवरने सम्बन्धी सचेतनता उन्हें फूटी आँखों न सुहाती। राममोहन, विद्या-सागर से लेकर गांधी, सुभाषचन्द्र तक कोई भी प्राच्य देश की नारियों के लिए कुछ नहीं कर सका—कारण नारियाँ स्वयं अपने से ही आत्मघाती समर में लिप्त रहती हैं। सुनेत्रा देवी अपने बॉब-कट बालों में अँगुली फेरती-फेरती सोच रही थीं, व्यूटी सैलून में जाने का समय हुआ या नहीं। और उसी के साथ-साथ यह भी सोच रही थीं : बाल और मेकअप देख करके ही बुढ़ियाँ नाक-भौंह चढ़ाती हैं, तिस पर अगर नेपाली बॉय यह प्रकट कर दे कि घर में रोज़ जो मछली आती है वह बिल्ली के लिए नहीं आती तो क्या होगा ?

देश-सेवा की इच्छा न होती तो वह शास्त्रानुशासिनी विधवाओं के मुँह पर कह सकती थीं, पेटेन्ट दवाइयों के नाम पर तुम जिनका सेवन करती हो उनमें साँड़ का जिगर तक होता है। लेकिन कहने से क्या लाभ ?

'हाई सोसायटी' नामक संस्था के प्रति भी सुनेत्रा देवी के मन में क्रोध जागा था। गोबर से भरे दिमाग वाली कई ऐसी वृद्धाएँ हैं, जो इक्कीस साल की उम्र से ही सूत कातती और तकली चलाती आयी हैं। ऊँची सोसायटी में अभी तक इन्हीं शिलीभूताओं की प्रतिष्ठा है। देश-सेवा के क्षेत्र में भी सीनियौरिटी की इतनी कद्र क्यों है, यह वे नहीं समझ

पातीं।

सुनेत्रा देवी मोटी धोती नहीं पहन पातीं। अथच, इन शिलीभूता महिलाओं के निकट साज-सज्जा और प्रसाधन की उपेक्षा ही देश-सेवा का मापदण्ड है। नहीं! कुछ न कुछ नया काम करना ही होगा।

इस सिलसिले में पद्मलोचन और हरिहर की बातचीत याद आयी—"मुन्सिफी से शुरू करके घिसटते-घिसटते हाई-कोर्ट के जज बनने का स्वप्न देखते हैं। दो-एक जने पहुँच भी जाएँगे। लेकिन तब सिर्फ डायबिटीज और ब्लड प्रेशर की जय-जयकार होगी। जो कर्म-कुशल हैं वे सीधे ही जज बन जाते हैं।"

सुनेत्रा देवी समझ गईं, प्रमोशन के रास्ते नहीं चलना होगा। पेड़ पर चढ़े बिना कोई फन्दा जुटाना होगा। ठीक उसी समय पड़ोस की छत पर की महिला पर उनकी नज़र पड़ी। धूप की तरफ पीठ करके वह धीरे-धीरे बड़ियाँ तोड़ रही थी। सुनेत्रा के नेत्र किंचित् गोलाकृत हो गए। विकल बुद्धि की घड़ी मानो अकस्मात झटका खाकर चल पड़ी।

राष्ट्रीय बड़ी-परिषद अथवा नेशनल बड़ी-बोर्ड के जन्म के पीछे यही सामान्य-सी घटना है। बड़ी-प्रस्तुत-मग्ना वृद्धा की ओर कुछ देर तक ताकते रहने पर ही सुनेत्रा देवी समझ गईं, देश का भविष्य और नारी जाति का भविष्य

इस 'बड़ी' में ही निहित है। बड़ी को कुटीर-उद्योग कहना अन्याय होगा। बड़ी हमारे देश में नारी-मूर्ति का प्रतीक हो सकती है। अगर किसी संस्था के माध्यम से देश की महिलाओं को बड़ियाँ तैयार करने में लगाया जाए एवं इन बड़ियों की देश-भर में सर्वत्र बिक्री के लिए आवश्यक व्यवस्था की जाए तो कैसा रहे!

दूसरे ही दिन राष्ट्रीय पुस्तकालय में सुनेत्रा देवी ने यूरोप और अमेरिका के नारी-स्वातन्त्र्य का इतिहास पढ़ना शुरू किया। दो-चार दिनों में ही दो कापियाँ भर गईं। सुनेत्रा देवी ने एक जगह लिखा : 'अमेरिका में नारी-मुक्ति के आन्दोलन के लिए टाइप-राइटर ने जो काम किया, हमारे देश में वही काम बड़ियाँ करेंगी।'

यथासमय प्रख्यात होटल के वातानुकूलित सभाकक्ष में सम्वाददाताओं, विचारकों और विशिष्ट नागरिकों की एक बैठक में सुनेत्रा ने अपनी योजना का विस्तृत विवरण पेश किया।

इस अभागे देश के कोटि-कोटि जनों की आर्थिक-मुक्ति के लिए नारी-मुक्ति भी आवश्यक है। लेकिन किस रूप में? भारी उद्योग, मझले उद्योग और खेती इत्यादि के रहते हुए मामूली बड़ियाँ क्यों? सुनेत्रा देवी का निवेदन था, तुच्छ बड़ी के भीतर विराट सम्भावना का बीज प्रसुप्त है।

'बड़ी' स्वादिष्ट होती है। प्रचार के माध्यम से इसकी लोकप्रियता लाखों गुनी बढ़ाई जा सकती है। फलस्वरूप सुनियोजित रूप में रबी की फसल के सहारे नाना प्रकार

की प्रोटीन-युक्त वड़ियाँ तैयार की जाएँ तो उनकी विक्री निश्चित है। ऐतिहासिक और सामाजिक दृष्टि से देखने पर वड़ियों के साथ हमारा सम्पर्क युग-युगान्तरव्यापी है। वम्वागढ़ पुरातत्त्व-विभाग के साम्प्रतिक खनन-कार्य से प्रमाणित हो गया है कि पाँच सहस्र वर्ष पूर्व भी रमणियाँ सूर्य-किरणों की ओर पीठ करके बड़ियाँ तैयार करती थीं। प्राचीन ऋषि भी वड़ियों के प्रेमी थे। बड़ियाँ तैयार करते समय फेंटने का काम सुचारु रीति से न होने के कारण अपनी पत्नी को धिक्कारते हुए ऋषि सोम शर्मा ने चार मूल्यवान श्लोकों की रचना की थी। वे इस समय ब्रिटिश म्यूज़ियम में संरक्षित हैं।

रवी की फसल के माध्यम से कृषकों के जीवन में भी विप्लवकारी परिवर्तन लाया जा सकता है क्योंकि सिर्फ धान की फसल उगाकर इनमे बहुतेरे साल के बाकी समय में निकम्मे रहते हैं। इस खण्डित और विच्छिन्न देश को जो वस्तुएँ आज भी एक सूत्र में बाँधे हुए हैं वड़ी उनमें अन्यतम है। पूरव-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण इस उपमहादेश में वड़ियाँ कहाँ नहीं हैं! वास्तव में वड़ी की महिमा बड़ी है।

इस योजना के अनुसार एक राष्ट्रीय वोर्ड घर-घर में किफायती दामों पर दाल, सिललोढ़ा, पोस्त, टीन और तेल आदि की सप्लाई करेगा एवं उचित दामों पर तैयार वड़ियों की खरीद भी करेगा। एक सुसंगठित मार्केटिंग वोर्ड आवश्यक वैज्ञानिक परीक्षा के उपरान्त एक विशेष

ट्रेडमार्क लगाकर बड़ियों की बिक्री करेगा। योजना का एक विशेष पक्ष था--उत्तर की बड़ियों को दक्षिण में और दक्षिण की बड़ियों को पूर्व और पश्चिम में भेजना। फलस्वरूप राष्ट्रीय एकता अभियान में गति आएगी। उन्नत प्रकार की बड़ियाँ तैयार करने की प्रणाली सिखाने के लिए चार आंचलिक महाविद्यालयों के अलावा डेढ़ सौ चल-शिक्षण-केन्द्र खोले जाएँगे।

एक प्रश्न के उत्तर में सुनेत्रा देवी ने कहा कि देश की नारियों में से अनेक में बड़ी तैयार करने की जन्मजात दक्षता होती है। आधुनिक शिक्षा-प्राप्त अभिजात नगर-वासिनी नारियों के लिए कुछ असुविधा हो सकती है, लेकिन समाजवादी प्रकार के समाज की स्थापना के लिए उन्हें थोड़ा-वहुत कष्ट स्वीकार करना ही होगा। बड़ियाँ तैयार करने के लिए शुरू में कानूनी बाध्यता न लगाकर तैयार करने वालियों के पतियों को आयकर में एक विशेष छूट दी जा सकती है।

श्रीमती चट्टोपाध्याय ने यह भी कहा कि इस योजना के साथ आर्थिक और सामाजिक प्रश्नों के अलावा स्वास्थ्य का प्रश्न भी जुड़ा हुआ है, क्योंकि महिलाएँ इस प्रथम सरकारी सहयोग द्वारा खुली हवा और धूप का सेवन करने के लिए उत्साहित होंगी।

इसके बाद जब श्रीमती चट्टोपाध्याय ने अपने कर-कमलों से प्रत्येक अतिथि की प्लेट में तली हुई बड़ियाँ परोसीं तब कम से कम चौबीस फोटोग्राफर तसवीर उतारने में लगे

थे।

इस सनसनीखेज खबर को देश के अधिकांश समाचार-पत्रों ने पहले पृष्ठ पर स्थान दिया। आर्थिक पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकीय लेख सरकार से आयकर की छूट के प्रस्ताव पर विशेष रूप से विचार करने का अनुरोध करने लगे।

प्रादेशिक पत्रिकाओं ने दावा किया कि इस प्रकार की योजना देश के इस स्वर्णिम अंचल के ही वासियों के मस्तिष्क में उद्भूत हो सकती थी। विदेशियों द्वारा संचालित एक पत्रिका के सम्पादकीय मन्तव्य में कहा गया कि सागर-तट पर अपने अंग उघाड़े हुए सूर्यस्नान में समय नष्ट न कर यदि यूरोपीय और अमेरिकी रमणियाँ वड़ियाँ तोड़ने का अभ्यास करें और वे वड़ियाँ अफ्रीका और एशिया में मुफ्त भेजी जाएँ तो अविकसित देशों को विशेष सुविधा हो।

फिल्मी पत्रिकाओं ने समाचार दिया कि प्रसिद्ध अभिनेत्रियाँ सार्वजनिक स्थलों में वड़ियाँ तोड़कर इस योजना की लोकप्रियता वढ़ाएँगी। उन्होंने यह भी सूचना दी कि गीतों के एक सम्राट ने वड़ी-सम्बन्धी गीत की रचना की है जिसे स्वरों के एक सम्राट स्वरवद्ध कर रहे हैं और जिसे स्वरों की एक सम्राज्ञी प्रस्तुत करने वाली हैं।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि प्रायः सभी ने इस युगान्तरकारी योजना की भूरि-भूरि प्रशंसा की। सरकार से अनुरोध किया गया कि दो-चार करोड़ रुपयों के खर्च के डर से कहीं वे इस योजना की भ्रूण हत्या न कर डालें।

और कोई समय होता तो माननीय मन्त्री महोदय

सुनेत्रा देवी के व्यक्तिगत अनुरोध पर ही इस योजना के लालन-पालन का दायित्व ग्रहण कर लेते। लेकिन इन दिनों स्थिति क्षीणकाय थी। सरकारी रुपए से दो पैसे के चने खरीदने के लिए भी सौ बार सोचना पड़ता था।

तो भी जनमत को प्रसन्न रखने के लिए कुछ करना आवश्यक था। अतएव योजना के सारे पक्षों पर विचार करने के उद्देश्य से माननीय मन्त्री महोदय ने एक विशिष्ट एक-सदस्यीय आयोग की नियुक्ति कर डाली। आयोग के एकमात्र सदस्य थे श्री नगेन्द्रनाथ चाकलादार।

अखबारों में नगेन्द्रनाथ का नाम प्रकाशित होते ही बड़ा कुतूहल हुआ। उनके बारे में मैं जो जानता हूँ वह निवे-दित है।

नगेन्द्रनाथ चाकलादार हाल ही में सरकारी आडिट एण्ड एकाउंट्स विभाग के उच्च पद से अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। दुष्ट लोगों का कहना है, यदि नगेन्द्रनाथ के कोई सत्यभाषी कनिष्ठ भ्राता होता तो वह कम-से-कम आज से सात वर्ष पूर्व ही नौकरी से अवकाश ग्रहण कर लेते। चाकला-दार की आध इंच चौड़ी अपरिमार्जित मूँछों के पीछे कई वर्ष रहस्यजनक रूप से गुम हो गए हैं। और इस तथ्य के पीछे नगेन्द्रनाथ के दूरदर्शी पिता का सुनियोजित षड्यंत्र था।

किन्तु नगेन्द्रनाथ को देखकर मुझे लगता था कि उनकी वय जितनी बताई जाती है उससे भी कम है। उनके अल्प शरीर को देखकर उनकी वय को ४५ बताकर आसानी

से चलाया जा सकता है। उनकी देह को पुस्तक के रूप में देखने पर कहा जा सकता है कि इसकी सिलाई और बँधाई सचमुच सुन्दर है।

चाकलादार का अपना अभिमत है—दुनिया में इतने घाव खाकर भी मेरा शरीर इतना अवशिष्ट है, यही आश्चर्य की बात है। विवाह के पहले वर्ष में ही उनकी पत्नी अस्वस्थ हो गईं एवं कई वर्ष तक शैयाशायी रहकर मृत्यु-मुख में जा पड़ीं। इसके बाद अगर उन्हें अपनी खिचड़ी खुद पकाकर न खानी पड़ती तो आज भी उन्हें पेंतीस वर्ष का युवक कहकर चलाया जा सकता था।

पुत्रहीन चाकलादार का स्वप्न था कि वह अवकाश ग्रहण करने पर अवशिष्ट समय अपने मनमाने ढंग से काट देंगे। किन्तु हाय! इस अभागे देश में अवकाश-प्राप्त न्यायाधीश और अवकाश-प्राप्त सरकारी लेखपाल के जीवन में अवकाश नाम की कोई वस्तु नहीं है। कमीशन-कमेटी, ट्राइब्यूनल इत्यादि लगे ही रहते हैं—उच्च पदस्थ पेंशनभोगियों को चैन की साँस लेने का समय नहीं। चाकलादार की विपत्ति और भी अधिक है। कारण, उनके पास विवेक नाम की एक वस्तु है। काम में झाँसा देना उन्होंने नहीं सीखा। निर्लज्ज होकर दूसरों की टाइप की हुई रिपोर्ट पर 'आई एग्री' कह-कर वह हस्ताक्षर नहीं कर पाते।

इसके अलावा गृहस्थी के खर्च के रुपयों के सम्बन्ध में कई वार अपनी पत्नी द्वारा प्रवंचित होकर उनकी यह धारणा वन गई है कि इस संसार में सारे लोग नाना प्रकार

के जाल बिछाकर सरकारी धन फाँसने की घात में हैं। इसीलिए अपने लम्बे कर्म-जीवन में उन्होंने लाखों आडिट ऑब्जेक्शन किए हैं एवं उनके प्रकोप से न जाने कितने उच्चाभिलाषी कर्मचारियों के चेहरे पर बारह बज गए हैं। कहते हैं कि अवकाश ग्रहण करने के दिन भी उन्होंने पैंतीस आडिट ऑब्जेक्शनों पर हस्ताक्षर किए थे। और यदि सुयोग मिलता तो वह अपनी पेंशन-फाइल पर भी ऑब्जेक्शन करने से न चूकते।

चाकलादार सुनेत्रा देवी के फ्लैट के पास ही रहते थे। कमीशन का समाचार प्रकाशित होते ही तनिक भी विलम्ब किए बिना सुनेत्रा उनसे साक्षात्कार करने गईं।

कॉलिंग बेल दबाते ही जाली की बनियान और मैली पैंट धारण किए जिस क्षुद्राकृति व्यक्ति ने दरवाज़ा खोला उसे नौकर समझकर सुनेत्रा बोलीं—"बॉय! अपने साहब को बुला दो!"

जब बॉय ने प्रकाशित किया कि वह ही चाकलादार हैं तब सुनेत्रा की अवस्था कैसी हो गई होगी, इसकी कल्पना पाठकगण स्वयं ही कर सकते हैं। बार-बार क्षमा-याचना करने के उपरान्त सुनेत्रा अपना परिचय देकर अपनी योजना के सम्बन्ध में सामान्य चर्चा करने लगीं। किंचित हुंकार से अस्फुट स्वर में उन्होंने बताया कि जब सुनेत्रा-योजना के भविष्य-निर्धारण का दायित्व चाकलादार के हाथ में है तब फिर वह अपने मानसपुत्र के भविष्य के सम्बन्ध में निश्चिन्त हैं। सरकार की ओर से फिलहाल तीस लाख रुपए मिलते हैं

अर्थ-मंत्री के शुभ जन्म-दिन पर काम शुरू कर दिया जाएगा।

सुनेत्रा देवी और चाकलादार—अपने मानस-पट पर इनके चित्र अगल-बगल में रखकर विचार करें। चाकलादार पाँच फुट, सुनेत्रा देवी कम-से-कम पाँच फुट पाँच इंच। चाकलादार के बाल खूब बड़े। उलट देने पर प्रायः गर्दन तक आ जाते हैं। सुनेत्रा देवी ने बहुत दिनों पहले ही फ्रांसीसी हेयर ड्रेसिंग सैलून में अपने बड़े बाल छँटवाकर छोटे कर लिए हैं। अगर चाकलादार लाइटवेट हैं तो सुनेत्रा तनिक हैवी-वेट। सुनेत्रा देवी जो साड़ियाँ पहनती हैं उनका निम्नतम मूल्य है पैंतालिस रुपया। चाकलादार रैडीमेड खादी बुशशर्ट के अलावा और कुछ धारण नहीं करते।—अधिकतम मूल्य चार रुपया (रिबेट के बाद तीन रुपया पचहत्तर पैसे)। चाकलादार के पैंट पर इस्त्री नहीं होती, जूतों पर पालिश नहीं। दुष्ट लोग कहते हैं उनका कोई भी मौजा साबुत नहीं। इसके बगल में सुनेत्रा देवी की प्रसाधन-धन्य देहलता की कल्पना कीजिए। शीश की केशराशि से लेकर चरण-कमल के नख तक को आकर्षक बनाने के लिए कम-से-कम पैंतीस अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त प्रतिष्ठानों का सहयोग आवश्यक हुआ है।

मितव्ययता के मूर्त प्रतीक इन सज्जन के प्रथम दर्शन पर सुनेत्रा मन ही मन हँस पड़ी थीं। मन ही मन कहा था, चार्ली चैपलिन का देशी संस्करण। एक बार इच्छा हुई कि श्रीमान जी से कहें कि तकिए के दो खोलों को एक साथ

सिल लेने से क्या [illegible]

सुनेत्रा ने सोचा [illegible]
अभाव है। किन्तु हाय! [illegible]
क्षुद्र सज्जन एक बार जो [illegible]
भी प्रकार टस से [illegible]
क्षुद्राकृति गोरखों की [illegible]
हैं।

दीवार पर टँगी एक [illegible]
दिन चाकलादार ने [illegible]
समय प्रकट रूप से [illegible]
तनिक भी शोभन नहीं है।

दुष्ट लोगों का कहना है कि [illegible]
ने वताया कि उनकी महाराजिन [illegible]
नही हैं। होतीं तो भी वड़ी-योजना से सम्बद्ध किसी व्यक्ति को चाय-पान द्वारा सन्तुष्ट करना उनके लिए सम्भव न होता। जो हो, इस अफवाह के पीछे कोई सच्चाई है या नहीं, मेरे लिए यह कहना कठिन है।

इसके बाद सुनेत्रा ने अपने सुरमा-रंजित भावगर्भ नेत्रों से चाकलादार को कई वार निहारा, किन्तु कोई नेत्रगत प्रतिध्वनि न पाने पर उदास मन से घर की ओर लौट आयीं।

चाकलादार की आकृति और प्रकृति के सम्बन्ध में उस रात सुनेत्रा देवी ने जितना ही विचार किया उतना ही उनका मन आह्लाद से भर उठा। अपनी योजना की सफ-

लता के विषय में उनके मन में तब भी किसी प्रकार का कोई सन्देह नहीं उठा था।

'बड़ी योजना' को चाकलादार विष-नेत्रों से क्यों देखते थे यह वह ही जानें। यह भी हो सकता है कि दीर्घकाल तक महाराजिन की रसोई खाते रहने के कारण वह बड़ी का मूल्य समझने में असमर्थ थे। अथवा बाज़ार से खरीदी हुई तृतीय श्रेणी की लौह-कठिन कृष्णकाय बड़ियों का कई बार भोजन करके वह उस वस्तु के प्रति अपना आकर्षण खो बैठे थे। उसे केन्द्र बनाकर सचमुच कोई महान योजना जन्म ले सकती है, यह बात उनकी भ्रम-खोजी आडिट-बुद्धि के लिए अगोचर थी।

जो हो, उस एक-सदस्यीय चाकलादार कमीशन ने विभिन्न व्यक्तियों और प्रतिष्ठानों की राय जानने के लिए यथासम्भव समाचारपत्रों में विज्ञापन दिया और इन क्षेत्रों में जो होता है वही हुआ।

सीनियर समाज-सेविका हेमांगिनी देवी ने (जिनके जमाई को कभी सुनेत्रा देवी ने किराए पर एक फ्लैट देने से इनकार कर दिया था) बड़ियों के स्थान पर उपलों के सम्बन्ध में एक सुदीर्घ प्रस्ताव पेश किया। कमीशन के निकट एक लिखित आवेदन में उन्होंने कहा कि बड़ी-योजना एक मध्यवर्गीय चक्कर है। किन्तु उपला सर्वसाधारण की

चीज़ है।

इस सुचिन्तित विवरण का पाठ करने पर चाकलादार मानो तनिक उपले की ओर झुक गए। इधर समाचार-पत्रों में व्योरा पढ़कर प्रगतिशील क्षेत्र में उपला-योजना की लोकप्रियता भी खूब बढ़ गई।

कमीशन के प्रकट अधिवेशन में चाकलादार ने बड़ी और उपला के सादृश्य के सम्बन्ध में मत व्यक्त किया था। दोनों की निर्माण-प्रणाली भी बहुत कुछ एक है। बस इतना ज़रूर है कि बड़ी आकार में कुछ छोटी होती है।

विशेषज्ञों की साक्षी से प्रकट हुआ कि उपले दीवारों पर और बड़ियाँ छतों पर सुखाई जाती हैं, तथापि उपलों के सम्बन्ध मे सुविधा की बात यह है कि हम चाहें तो उन्हें छत पर भी सुखा सकते हैं। किन्तु राजपथ की दीवार पर अगर बड़ियाँ सुखाएँ तो उनमें से एक भी साबुत न बचेगी।

उपलों के पक्ष में जिस तर्क ने चाकलादार का ध्यान आकर्षित किया वह था : यदि 'बड़ी-योजना' स्वीकार कर ली गई तो दाल के बाज़ार में आग लग जाएगी, और कोई भी सरकारी फायर-ब्रिगेड उसे बुझाने में समर्थ न हो सकेगा।

विख्यात अर्थशास्त्री प्रोफेसर अहलूवालिया ने अपने साक्ष्य में कहा कि उपला और बड़ी दोनों ही शिल्पों को सूरज पर निर्भर रहना होगा। अतः कृषि की भाँति इनको भी अधिकतर मानसून के मिजाज पर चलना पड़ेगा।

प्रख्यात स्टैस्टीशियन डा० दवे, ए० वी० सी० डी०

(लंदन), ई० एफ० जी० (हैम्बुर्ग), एच० आई० जे० (कोलम्बिया) इत्यादि-इत्यादि ने अपने तीन दिन के लम्बे साक्ष्य में 'सीज़नल फलक्चुएशन एण्ड इट्स इन्फलुएन्स ऑन प्रोडक्टिविटी एण्ड एम्प्लॉएमेंट' के सम्बन्ध में विस्तृत विचार किया।

सुनेत्रा देवी के कौंसिलर प्रख्यात ब्रीफलेस बैरिस्टर साहा ने कहा : बड़ी के कच्चे माल की सप्लाई उपले के कच्चे माल की सप्लाई की अपेक्षा अधिक निर्भर योग्य है। आवश्यकतानुसार दाल के उत्पादन की वृद्धि करना भी सम्भव है। किन्तु गोबर का उत्पादन गाय-बछड़ों की इच्छा पर निर्भर करेगा।

राष्ट्रीय पशु-चिकित्सा गवेषणा केन्द्र के डिरेक्टर जनरल प्रोफेसर घोड़पड़े ने पर कैपिटा गोबर उत्पादन की एक सम्भाव्य तालिका पेश की। श्री साहा की जिरह के उत्तर में उन्होंने यह अवश्य स्वीकार किया कि दुष्ट ग्वालों ने यदि अधिक गोबर-उत्पादन की चेष्टा की तो देश के पशुओं के स्वास्थ्य की अवनति की सम्भावना है।

किन्तु राष्ट्रीय फलित अर्थनीति-गवेषणा-केन्द्र के उपदेष्टा श्री रामलिंगम ने अपने साक्ष्य में कहा कि पर हैड उत्पादित गोबर का अधिकांश बेकार हो जाता है। अतएव निकट भविष्य में गोबर की कमी की कोई आशंका दिखाई नहीं देती। दोनों की तुलना करने पर उपला-शिल्प की उन्नति से अभी जो गोबर गलियों, सड़कों में सूखकर नष्ट हो जाता है वह काम आ जाएगा। एक राष्ट्रीय वर-

बादी बन्द हो जाएगी किन्तु बड़ी-शिल्प के क्षेत्र में बरबादी बन्द होने का सवाल नहीं उठता। बस दाल एक रूप से दूसरा रूप ग्रहण कर लेगी। उससे फूड-वैल्यू में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

इन साक्ष्यों को सुनकर चाकलादार का मन क्रमशः किधर जा रहा था, यह बताने की कोई आवश्यकता नहीं।

लेकिन पाठकगण जरा मानस-नेत्रों से बेचारी सुनेत्रा की दशा की कल्पना करें। इस बड़ी पर निर्भर करके ही उन्होंने समाज-सेवा के सागर में अकेले ही अपनी नाव छोड़ी है—'बजरंग बली मेरी नाव चली, जरा बल्ली कृपा की लगा देना।'

लेकिन बल्ली लगाए कौन ? प्रख्यात चिकित्सक डा० महापात्र सुनेत्रा के परिचित थे। उम्र की तुलना में सुनेत्रा की देह के लालित्य की कई बार प्रशंसा कर चुके हैं। उन्होंने कहा था कि चिन्ता की कोई बात नहीं है। ज़रूरत पड़ी तो वह पाशुपत-अस्त्र का प्रयोग करेंगे। कहेंगे—उपले के धुएँ से कैंसर-रोग की वृद्धि की सम्भावना है। किन्तु आपत्तिकाल में उन्होंने भी सुनेत्रा का परित्याग कर दिया। किसी सूत्र से समाचार पाकर उनकी पत्नी ने स्पष्ट भाषा में यह जता दिया कि यदि इस समाज-सेविका के साथ वह किसी भी प्रकार का सम्बन्ध रखेंगे तो वह अगले ही दिन मायके चली जाएँगी एवं अदालत में मेन्टेनेन्स का केस चलाने में भी नहीं हिचकेंगी।

अब क्या किया जाए! चाकलादार के हृदय में अनु-

भूति नाम की कोई वस्तु नहीं। जीवन-भर आडिट और लेखारक्षण करने के कारण सुकुमार वृत्तियाँ सूख गई हैं। उन्होंने एक बार वेचारी सुनेत्रा की ओर आँख उठाकर ताका भी नहीं।

लेकिन सुनेत्रा की दृढ़ प्रतिज्ञा की प्रशंसा किए विना नहीं रहा जा सकता। अगर देश में ऐसे दस जने भी होते तो हमारे दिन फिर जाते।

चाकलादार के साथ मेरे अल्प परिचय की बात सुनकर सुनेत्रा देवी ने मौसी के माध्यम से मुझे विशेष रूप से घेर लिया। यद्यपि यह अनुचित बात थी, फिर भी वेचारी सुनेत्रा देवी के चेहरे की ओर देखकर मैंने कौशल से चाकलादार के निकट वात छेड़ी। चाकलादार नें तत्क्षणात् वताया कि मेरी जगह अगर कोई और होता तो वे कमीशन की मानहानि के अभियोग में उसे जेल भेज देते। लेकिन मैं भी इतनी आसानी से छोड़ देने वाला नहीं था।

तव चाकलादार ने गोपन रूप से मुझे वताया कि वड़ी-योजना ग्रहण करने से दरिद्र देश का बहुत-सा धन पानी में वह जाएगा। इस दृष्टि से उपले का भविष्य उज्ज्वल है।

लाचार होकर मैंने आशा छोड़ दी। मौसी और सुनेत्रा देवी ने अपने मन की वात कही—"आडिट कोड घोंटते-घोंटते चाकलादार का हृदय एकदम शुष्क काष्ठ में रूपान्तरित हो गया है।"

जिस दिन चाकलादार ने साढ़े वारह सौ पृष्ठों की रिपोर्ट सरकार की ओर प्रेषित की थी उस दिन भी सुनेत्रा

देवी के साथ मेरा साक्षात्कार हुआ था। वह इतनी विच-लित हो गई थीं कि प्रसाधन करने की बात भी याद न रही। चेहरे का पाउडर पसीने से घुलकर गर्दन पर आकर इकट्ठा हो गया।

मुझसे कहा—"अभी समझ में नहीं आता। एक दिन समझ में आ जाएगा।" सुनेत्रा देवी के नेत्र अचानक डब-डबा आएँगे इसकी मैंने प्रत्याशा नहीं की थी। कमर से रूमाल निकालकर आँखें पोंछते-पोंछते बोलीं—"मैंने क्या किया है जो चाकलादार मुझसे ऐसी दुश्मनी रखते हैं।"

मैं मौन रहा। फिर धीरे-धीरे निवेदन किया—"चाकलादार ने अपने विश्वास के विरुद्ध कभी भी किसी से भी कोई समझौता नहीं किया। उन्हें जब जो सही लगा वही किया है।"

लेकिन अब सुनेत्रा देवी सहसा भभक उठीं और मुझे उन्होंने बताया कि 'बड़ी-योजना' सफल होकर रहेगी। चाकलादार की कोई रिपोर्ट सुनेत्रा चट्टोपाध्याय को रोकने में समर्थ नहीं हो सकती।

सुना है, इसके बाद सुनेत्रा देवी ने तीन दिन तीन रात भोजन ग्रहण नहीं किया। लगातार घर में बैठी रहीं।

इस दीर्घ साधना से अकस्मात उनके सामने विचार का नवीन दिगन्त खुल गया था। वह विचार पहले क्यों नहीं आया, यही सोचकर वह अपने आप को धिक्कारने लगीं एवं इसके बाद सीधी सम्बद्ध विभाग के मन्त्री से भेंट करने गईं। मन्त्री महोदय ने वही एक ही बात कही—"चाकला-

दार कमीशन को तुमने यह बात क्यों नहीं बताई ?"

इसके बाद दोनों में क्या बातचीत हुई यह मुझे ज्ञात नहीं, लेकिन अखबारों में 'चाकलादार-रिपोर्ट' को रद्द करके 'बड़ी-योजना' स्वीकार करने का समाचार प्रकाशित हुआ था। कारण कुछ नहीं, फॉरेन एक्सचेंज।

सरकारी प्रेस नोट में कहा गया था, सरकार ने बड़ी श्रद्धा से विशेष यत्नपूर्वक चाकलादार-रिपोर्ट पर विचार किया है। बड़े खेद का विषय है कि विदेशी मुद्रा के उपार्जन में 'बड़ी-उद्योग' की संभावना के सम्बन्ध में चाकलादार-कमीशन को विचार करने का सुयोग नहीं मिला। देखा गया है कि विदेशी मुद्रा आकृष्ट करने में 'बड़ी-उद्योग' की संभावना उज्ज्वल है। किन्तु, गोबर की सप्लाई की संभावना किसी भी देश में नहीं है।

इस देश में 'सबसे ऊपर फॉरेन एक्सचेंज सत्य है ; उससे ऊपर और कुछ नहीं।' फलस्वरूप सभा-समितियों में, संसद में, समाचार-पत्रों में कहीं भी प्रतिवाद नहीं उठा ; वरन बहुतों ने अभिनन्दन किया।

यथासमय, सुनेत्रा देवी ने टेलीफोन पर मुझसे बातचीत की। सुनेत्रा देवी के ही मुँह से सुना : अगर यह योजना कुछ दिन पहले सरकार को मिल जाती तो इसे वर्तमान योजना के हार्ड कोर में शामिल कर लिया जाता, ऐसा कहकर स्वयं योजना-मन्त्री ने खेद-प्रकाश किया था।

सुनेत्रा देवी ने कौशल से चाकलादार की बात चलाकर उन पर व्यंग्य करने में भी कसर न रखी। मुझे यह भी

आदेश दिया कि मैं टेलीफोन करके चाकलादार से सारी बातें निवेदन कर दूँ।

भद्र महिला सचमुच ही क्रुद्ध हो गई थीं, फिर भी आदेशानुसार बड़े कौशल से चाकलादार को सारी बातें बता दीं और यह भी बता दिया कि बहुत दिनों से महिला-समुदाय से आउट ऑफ टच रहने के कारण चाकलादार के लिए किसी भी अभिमानिनी महिला की साइकोलॉजी समझना संभव नहीं है।

चाकलादार लेकिन तब भी व्यंग्य करने से बाज़ नहीं आए। बोले—"अन्त भला तो सब भला! क्योंकि सर्वशक्तिमान ईश्वर भी आडिट ऑब्जेक्शन को मानकर चलते हैं।"

पहले समय में एक की बात दूसरे से कहना घृण्य अपराध माना जाता था। लेकिन आधुनिक युग में इसी को 'कम्युनिकेशन' कहते हैं। भावों का आदान-प्रदान करने वाला यह सम्प्रेषण अत्यन्त प्रयोजनीय और मूल्यवान कार्य है। मुझे चाकलादार का अन्तिम मन्तव्य सुनेत्रा देवी को बताना प्रयोजनीय लगा। उद्देश्य यह था कि वह चाकलादार के सम्भाव्य आक्रमण के विरुद्ध भली प्रकार सावधानी बरतें।

उत्तर में सुनेत्रा ने टेलीफोन पर ही जो हँसी हँसी वह तीन मिनट तक टिकी रही एवं बाद में यह भी पता लगा कि इस बीच पानी बहुत ऊपर आ गया है। उनकी योजना के सम्बन्ध में आवश्यक तथ्य-

संग्रह और अंक-संग्रह आदि हो चुका है। यथा देश-भर के नगरों और ग्रामों की महिलाओं की संख्या, वय के अनुसार उनकी विभिन्न तालिकाएं एवंसम्भाव्य कर्म-संस्थान। तपस्या में लगी रहने वाली जाति की महिलाओं के अग्राधिकार के प्रश्न की भी मीमांसा हो चुकी है। वड़ी तैयार करने के काम में पतिताओं को जुटाकर पतिता पुनर्वास योजना के साथ इस योजना को मिला देने का भी प्रस्ताव उठा था, किन्तु स्वास्थ्य-विभाग की सुविचारित सम्मति के व्यतिरेक के कारण सुनेत्रा देवी इसके लिए राजी नहीं हुईं।

मामला सचमुच वहुत तेजी से आगे वढ़ा। अव सुनेत्रा देवी का दफ्तर भी जम गया है। राष्ट्रीय वड़ी-वोर्ड सरकारी सहायता पर आधारित एक गैर-सरकारी प्रतिष्ठान वनना चाहता है। सुनेत्रा देवी का यह दृढ़ विश्वास है कि सरकारी उच्चादर्श के साथ गैर-सरकारी कार्य-कुशलता के शुभ विवाह में ही देश का कल्याण सम्भव है। इसी वीच कई लाख सरकारी रुपया भी आ गया है।

उस दिन अपनी इच्छा से ही मैं चाकलादार के घर में खोज-खवर लेने हाज़िर हुआ था। भले आदमी जो वुशशर्ट पहने चाय पी रहे थे उसमें वटननहीं थे। उन्होंने जव खुद ही उठकर दरवाज़ा खोला मैंने तभी लक्ष्य किया था कि वुशशर्ट की लम्वाई लगभग घुटनों तक आ लगी थी। मौसी के परा-

राष्ट्रीय 'वड़ी-वोर्ड' के सारे समाचार शुभ नहीं हैं यह वात कुछ दिनों वाद समाचारपत्रों में संसदीय विवरण पढ़ने पर ज्ञात हुई।

संसद में स्टार्ड क्श्वेचन नम्बर ६०६ में सम्बद्ध मन्त्री ने कहा—

"यह सत्य है कि सरकार ने श्रीमती सुनेत्रा चट्टोपाध्याय की युगान्तरकारी 'वड़ी-योजना' को सिद्धान्त रूप से स्वीकार कर लिया है। इस वीच ढाई लाख रुपया दिया जा चुका है और शीघ्र ही और तीन लाख रुपए की सहायता का प्रस्ताव फिलहाल वित्त-मन्त्रालय में विचाराधीन है।"

एक अनुपूरक प्रश्न में सदस्य महोदय ने जानना चाहा कि ये करोड़ों वड़ियाँ सुखाई कहाँ जाएँगी ?

मन्त्री बोले, "निस्सन्देह छतों पर। देश में छतों का अभाव नहीं है। फिलहाल हमें साढ़े तीन करोड़ वर्ग फुट के वरावर छतों की ज़रूरत है। इससे दुगुने परिमाण की छतें सहज ही मिल सकती हैं। वेशक यह कोरा अनुमान है। आगामी जनगणना में इस सम्वन्ध में विस्तृत विवरण इकट्ठे करने के लिए सेन्सस-कमिश्नर से पत्र-व्यवहार किया जा रहा है।"

प्रश्न : छत्तों से कौवे भगाने का काम कौन-सी संस्था करेगी ? कौवों से कितना नुकसान होने की आशंका है, यह भी जाँचा जाना चाहिए।

उत्तर : राष्ट्रीय अनुसन्धान-शाला में उन्नत प्रकार के काक विताड़न यन्त्र के सम्वन्ध में शोध हो रही है। जो हो,

फिलहाल ढाई लाख अपाहिजों को इस काम में लगाना सम्भव है। कौवों से होनेवाले नुकसान का परिमाण किसी भी रूप में १.५७ प्रतिशत से ज्यादा नहीं हो सकता। विशेषज्ञ समिति की ऐसी ही राय है।

प्रश्नोत्तर का यह पर्व यदि यहीं समाप्त हो जाता तो कोई विशेष चिन्ता की बात न थी। लेकिन अगला प्रश्न लगभग बम की भाँति फट पड़ा।

"क्या यह सच है कि 'बड़ी-बोर्ड' के फाइनेन्स मेम्बर श्री चाकलादार ने एक गुप्त रिपोर्ट में नागरिकों के घरों की छतों के व्यवहार के सम्बन्ध में संवैधानिक संदेह प्रकट किया है? श्री चाकलादार के मत से संविधान में संशोधन के बिना दूसरों की छतों पर बोर्ड को बड़ियाँ सुखाने का अधिकार नहीं है, क्या यह सच है?"

सम्बद्ध मंत्री को ऐसी अवस्था में [illegible] गया। संविधान के संशोधन से [illegible] जाने के कारण [illegible] गया था कि मैं कुछ भी [illegible] साहस न कर सका।

पहले ही कह चुका हूँ कि [illegible] उनका विश्वास [illegible] भाजिका बनी हुई है वह कुछ [illegible] ने मुझे बुलाकर [illegible] तरह के [illegible]

साहस नहीं हुआ क्योंकि मौसी के साथ सुनेत्रा देवी की मैत्री आज भी इतनी गहरी है कि सहेली के लिए अपने भानजे को सदा-सर्वदा के लिए त्याग करने में वह एक क्षण को भी संकोच न करेंगी।

'बड़ी-योजना' अब किस प्रकार पुनरुज्जीवित हो सकती है, मैं यह सोच नहीं पा रहा था। लेकिन कुछ ही दिन बाद पुलकित सुनेत्रा देवी का फोन आया, "आपने सुन लिया? विदेशी सहायता की बात चली है। फ्लेक फाउन्डेशन, जिसने पिछले साल विभिन्न देशों में सतहत्तर मिलियन डॉलर की सहायता दी है, उसी के साथ बातचीत चल रही है। उसके चीफ एडवाइज़र मि० ब्लॉकहैड यहाँ आ रहे हैं—बाकी बातें अखबार में देखिएगा।"

इन ब्लॉकहैड साहब के साथ सुनेत्रा देवी की तसवीर भी समाचार-पत्रों में यथासमय प्रकाशित हुई थी। साहब देखने में सचमुच सुन्दर हैं।

चाकलादार ने मुझसे कहा, "कुछ नहीं होगा। ब्लॉक-हैड हमारे देश से घृणा करता है। कुछ नहीं मिलेगा।"

मैं यह सोचता था। लेकिन रिपब्लिक हॉल में उनके सम्मान में आयोजित 'युग-युग में बड़ी' नामक नृत्य-नाट्य को साहब बड़े तल्लीन भाव से देखते पाए गए। सुनेत्रा देवी स्वयं ब्लॉकहैड की बगल में बैठी रही थीं। चाकलादार को

लेकिन जब सोचता हूँ कि देश की आर्थिक बरबादी को रोकने के अलावा उनका और कोई उद्देश्य नहीं है तो कुछ कह नहीं पाता।

इस नाटक की समाप्ति कहाँ है, नहीं जानता। आखिरकार 'बड़ी-योजना' सफल होगी या नहीं।

कई दिन बाद प्रेस ट्रस्ट ऑफ बम्बागढ़ द्वारा प्रचारित संवाद—

"आगामी वर्ष में विश्व के विभिन्न देशों को प्रायः १२.५ करोड़ रुपयों के मूल्य की बड़ियाँ भेजने की सम्भावना है। इस सप्लाई में तली हुई बड़ियाँ, मसालेदार बड़ियाँ और झोल की बड़ियाँ ही मुख्य हैं। हींग की बड़ियों की सप्लाई की संभावना एकमात्र अफगानिस्तान के अलावा और कहीं भी विशेष उज्ज्वल नहीं है।

"राष्ट्रीय बड़ी-बोर्ड की अध्यक्ष सुनेत्रा चट्टोपाध्याय ने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा है कि इस योजना के अनुसार अगले दो वर्षों में पचीस लाख नारियों को काम में लगाए जा सकने की संभावना है। मूल्यवान फॉरेन एक्सचेंज के अलावा देश के भीतर बड़ियों की बिक्री का परिमाण कम-से-कम १८.३ करोड़ रुपया होगा, ऐसी आशा की जाती है।

"फ्लेक फाउन्डेशन की रिपोर्ट के आलोक में सप्लाई के उन्नयन की संभावना पर विचार करने के लिए शीघ्र ही एक पर्यवेक्षक दल श्रीमती चट्टोपाध्याय के नेतृत्व में विदेश-यात्रा करेगा। न्यूयॉर्क, वाशिंगटन, टौरेन्टो, लन्दन आदि

नगरों में एक-एक 'वड़ी-विक्रय-केन्द्र' की स्थापना की योजना पर यह दल खोजबीन करेगा।"

मौसी के विशेष आनन्द का कारण यह है कि पर्यवेक्षक दल में जिन तीन जनों का नाम प्रकाशित हुआ है उनमें चाकलादार का नाम नहीं है।

सुनेत्रा देवी ने टेलीफोन पर मौसी से कहा,—"खवर सुन ली न! जान वची, भैया। शायद अव कोई आसान रास्ता निकले। विदेश से तेरे लिए अगर कुछ लाने की ज़रूरत हो तो वता। ट्रांजिस्टर, रेडियो, टेप-रिकार्डर, घड़ी, पैन, कैमरा, टाइपराइटर जो चाहे।"

मौसी वोलीं—"नहीं! तू अपना काम वनाकर आ। हमारे लिए तुझे चिन्ता नहीं करनी होगी।"

सुनेत्रा देवी वोलीं—"तू क्यों संकोच करती है। फॉरेन एक्सचेंज की कोई चिन्ता नहीं। मि० व्लॉकहैड तो हैं ही। जो कहूँगी वहीं करेंगे। विदेशी व्यक्ति हैं इसलिए नारी का सम्मान करना जानते हैं। दुनिया में सव चाकलादार थोड़े ही हैं।"

मौसी वोलीं—"जव जा ही रही है तो मुन्नी के लिए फॉरेन में पढ़ने वाला कोई अच्छा-सा पात्र देखना। आजकल तो फॉरेन-ट्रेन्ड लड़का पाना भी मुश्किल हो गया है।"

सुनेत्रा देवी वड़े ही मूड में थीं। वोली—"तू जरा भी फिक्र न कर। ऐसा कोई लड़का दीखा तो मैं उसे वोर्ड में ही नौकरी दे दूंगी। जव तक व्लॉकहैड हैं तव तक कोई चिन्ता नहीं।"

वड़ी हँसी-खुशी में ही टेलीफ़ोनालाप समाप्त हुआ था।

लेकिन पुनः दुःखद समाचार। लगभग साढ़े दस वजे सुनेत्रा देवी ने फिर फोन किया—"सर्वनाश हो गया। अभी-अभी समाचार-पत्र के दफ्तर से खबर आयी है कि अर्थ-मंत्रालय के परामर्श के अनुसार श्री नगेन चाकलादार को पर्यवेक्षक-दल का अन्यतम सदस्य मनोनीत किया गया है।"

हताशा में डूबकर मौसी वोलीं—"अब क्या होगा ?"

सुनेत्रा वोलीं—"देश की कोई प्रेस्टीज न रहेगी। ढाई रुपए की बुशशर्ट और गँवारू जूते पहनकर भला आदमी घूमता फिरेगा। मि० ब्लॉकहैड भी साथ में होंगे। वह हमारे सम्बन्ध में क्या सोचेंगे ! इसके अलावा पर्यवेक्षक दल में सभी महिलाएँ हैं। बस वही एकमात्र पुरुष सदस्य हैं।"

सुनेत्रा ने जानना चाहा कि यदि वह प्रतिवाद में पद त्याग कर दे तो कैसा रहे !

मौसी बोलीं—"अपनी नाक कटाकर दूसरे का असगुन करने से क्या लाभ !" उन्हें तो बस इसी की चिन्ता है कि बेचारी सुनेत्रा की प्राणों से भी प्यारी इस योजना को कैसे बचाया जाय।

सुनेत्रा ने कातर स्वर में कहा—"अब मेरा वश नहीं चलता, भाई। जीवन-भर ईश्वर मुझे वंचित रखता आया है। तू तो सब जानती है।"

मौसी—"तू अगर टूट गई तो काम नहीं चलेगा।"

सुनेत्रा—"अब वचा ही क्या है ? चाकलादार जर

रहा है तब सब चकनाचूर कर देगा। अब मेरा आखिरी अस्त्र भी बेकार हो गया।"

मौसी फोन लिये-लिये ही कुछ देर सोचती रहीं। उसके बाद चमककर बोलीं—"आखिरी अस्त्र क्यों कहती है, सुनू। अभी तो ढेरों हैं।"

सुनेत्रा बोली—'मेरा अब जीने का मन नहीं है, भाई। अगर मैं मर जाऊँ तो अपने भानजे से अख़बार में लिखने को कह देना। मेरी मौत के लिए अगर कोई जिम्मेदार है तो चाकलादार।"

"यह तो खैर हो जाएगा, लेकिन इससे तेरी योजना कैसे बचेगी ?"

"मैंने बचाने की पूरी कोशिश की है। तू तो गवाह है।"

मौसी ने इस बार जानना चाहा—"अपनी योजना को तू कितना प्यार करती है, मुझे सच-सच बता ?"

सुनेत्रा बोली—"अपने प्राणों से भी ज़्यादा। बेटा होता तो कहती बेटे की तरह। इसकी सफलता के लिए मैं किसी भी तरह का त्याग स्वीकार करने को तैयार हूँ।"

उसके बाद सुना है, दोनों सखियों में कई दिन तक जोर-शोर से भेंट-मुलाकात और गुप्त बातचीत होती रहीं। मेरे साथ अगला साक्षात्कार एयरपोर्ट पर। बेचारे चाकलादार इकलौती बुशशर्ट पहने कन्धे से एक झोला लटकाए एक कोने में चुपचाप बैठे थे। देखते ही लगता था मानो किसी आडिट ऑब्जेक्शन के सुअवसर की तलाश में हैं। सुनेत्रा देवी अवश्य अन्यत्र बैठी हुई हैं। ब्लॉकहैड सवेरे ही

चले गए हैं। न्यूयॉर्क में उनका स्वागत करेंगे। किसी संवाद-दाता के प्रश्न के उत्तर में चाकलादार बोले—"विदेशी यात्रा में फॉरेन एक्सचेंज की बरबादी बन्द करना उनका अन्यतम लक्ष्य है।"

मौसी सुनेत्रा देवी के साथ एक कोने में बैठी थीं। सुनेत्रा सचमुच सुन्दर दिखाई दे रही थीं। विदेश में इसी ढंग का प्रतिनिधि भेजना युक्तिसंगत है। सुनेत्रा देवी ने सिर पर मराठी ढंग से फूलों की एक वेणी पहन रखी है। दोनों की गोपन चर्चा के अन्त में मौसी बोलीं—"जो कहा है याद रखना!"

सुनेत्रा देवी बड़ी ही विनत लग रही थीं। साड़ी का आँचल सँभालते-सँभालते बोलीं—"और उपाय भी क्या है!"

एयरपोर्ट से घर लौटते समय मौसी बोलीं—"इस बार तुम्हारे चाकलादार के मृत्युबाण की व्यवस्था कर दी है। सुनू को श्रीमान जी अभी तक नहीं पहचान पाए।"

विदेश से मौसी को लिखी सुनेत्रा की चिट्ठी :

"तेरे कहे अनुसार आगे बढ़ रही हूँ। हर वक्त ब्लॉकहैड के साथ घूमती-फिरती हूँ। जाते समय जान-बूझकर चाकलादार को सब कुछ बता जाती हूँ। यह भी बता दिया है कि ब्लॉकहैड अभी तक कुँवारे हैं। लेकिन आदमी बड़ा ही कैलस है। मुझे ज्ञान सिखाया : देश का मूल्यवान फॉरेन

एक्सचेंज खर्च करके विदेश आयी हैं। चटपट काम खत्म कर डालिए।

"मैंने साफ कह दिया, आप अपना काम देखिए। उसी से देश कृतकृत्य हो जाएगा। श्रीमान जी ने इस ढंग से ताका कि डर लगने लगा। बिलकुल मास्टर जी की तरह। तू चिन्ता न करना। तेरी बात याद है। इति, सुनू।"

बाद की चिट्ठी—"चाकलादार ने यहाँ भी गड़बड़ शुरू कर दी है। कहते हैं रुपया आखिर रुपया है। देश का है तो, फ्लेक फाउन्डेशन का है तो। किसी भी तरह बरबाद नहीं करने दूँगा। आखिर में क्या होगा, कौन जाने! तू फिकर मत कर। तेरी बात याद है। ब्लॉकहैड के साथ और ज़्यादा घूम रही हूँ। पिकनिक पर गई थी। एक तसवीर भी ली थी। आज ही चाकलादार को दिखाऊँगी।"

और एक चिट्ठी—"तुझसे क्या कहूँ, भाई! चाकलादार का वेश देखकर दुःख होता है। सिर्फ एक गलाबन्द कोट लाए हैं। उसी को पहने सब जगह घूमते-फिरते हैं। कल देखा उसका भी बटन टूट गया है। न जाने भले आदमी कैसे हैं! काम खत्म करके सीधे होटल में अपने कमरे में जाकर बैठे रहते हैं। फॉरेन एक्सचेंज बचाते हैं। कोई साइट-सीइंग नहीं करते। पार्टियों में भी नहीं जाना चाहते। इसीलिए मेरी इच्छा हो रही थी, ख़ुद ही बटन लगा दूँ और कहूँ—'दो-एक सूट खरीद लीजिए। ऐसी चीज़ें जो देश में नहीं मिलतीं। तिस पर सस्ती।' पर भाई, साहस नहीं होता। इति, सुनू।"

इसके बाद कई लम्बे-लम्बे पत्र आए थे—मौसी ने वे मुझे नहीं दिखाए। हाँ, सुना है, चाकलादार सर्दी-बुखार से आक्रान्त हो गए थे। फिर भी सुनेत्रा की सेवा ग्रहण करने के लिए राजी नहीं हुए। यही नहीं, बैग से सुई-डोरा निकालकर ख़ुद ही गलाबन्द कोट का बटन सिलने बैठ गए थे।

यह भी सुना है कि सुनेत्रा ने लिखा था—"काश, तू यहाँ के हेयर कटिंग सैलून देख सकती। स्वर्ग समझो। और इतनी तरह के हेयर स्टाइल हैं कि बस ! मैंने नए ढंग का हेयर डू कराया है। काश, चाकलादार महाशय दिन-रात हिसाब में डूबे न रहकर जरा अपने ऊपर भी नज़र डालते।"

परवर्ती पत्र—"तुझसे क्या कहूँ भाई, यह आदमी जला-जलाकर खेलता है। कई नई चीजें खरीदकर—जैसे टेपरिकार्डर, ट्रांजिस्टर, रेडियो, घड़ी, कैमरा, मूवी कैमरा—होटल को लौट रही थी। वह बोले "क्यों फॉरेन एक्सचेंज नष्ट कर रही हैं !'

"बोली—'अच्छा कर रही हूँ।' वह बोले—'अपने देश से जो लायी थीं उससे तो विदेश में एक अँगोछा खरीदने का भी सामर्थ्य नहीं हो सकता।' मैं बोली—'आप निश्चिन्त रह सकते हैं। यह फॉरेन एक्सचेंज का खर्च नहीं है, फॉरेन एक्सचेंज का रोजगार है। यह प्रीति-उपहार है—मि० ब्लॉकहैड ने मुझे दिया है।'

"श्रीमानजी इधर नहीं तो उधर। मन्तव्य कर दिया—जब फॉरेन एक्सचेंज नहीं जा रहा है तब उनके कहने की

कोई बात नहीं। लेकिन इस तरह गिफ़्ट लेने से देश की सम्मान-हानि होती है। कितना पिक्यूलिअर आदमी है, भाई! खुद जो सर्कस के क्लाउन की तरह घूमते-फिरते हैं उससे देश की सम्मान-हानि नहीं होती!

"मेरे साथ श्रीमान जी ने फिर कोई बातचीत नहीं की—अपने कमरे में बैठे जाने क्या नोट लिख रहे हैं!

"तू मेरा प्यार ले! मुन्नी की बात भूली नहीं हूँ। अच्छे-से पात्र के लिए जाल बिछाए बैठी हूँ। पता लगते ही बताऊँगी। इति, सुनू।"

मौसी को लिखी गई परवर्ती चिट्ठी—'जो डरती थी वही हुआ, भाई। वह नोट मेरी योजना के विरुद्ध है। उनका कहना है कि इस फॉरेन टूर का कोई प्रयोजन न था। उन्होंने बाकी टूर के प्रोग्राम कैंसिल करने के लिए फॉरेन सेक्रेटरी को लिखा है।

"फिर तो मैं आपे में न रही। तूने उस दिन जो तरकीब बताई थी, झोंक में आकर उसी का प्रयोग कर डाला।

"होटल में मेरे पास के ही कमरे में वह रहते हैं। सीधी उसमें घुसकर बोली—'आप नोट भेज दें। मुझे कोई आपत्ति नहीं। लेकिन ऐसा हुआ तो मैं ब्लॉकहैड से शादी कर लूंगी।' प्रस्ताव का तात्पर्य भले आदमी के दिमाग में फिर भी न घुसा। पूछने लगे—'सो ह्वाट ?'

"ब्याह का एक पहलू फॉरेन एक्सचेंज वाला भी है

इस पर आडिटर ने ध्यान नहीं दिया। तब आँख में अँगुली डालती हुई बोली—'अपनी सिटीजनशिप त्यागकर देश में मेरा जो कुछ है सब कुछ बेचकर यहाँ ले आऊँगी।'

"भले आदमी का माथा तब कहीं जाकर ठनका। पूछने लगे, 'कितने रुपए का फॉरेन एक्सचेंज नष्ट होगा?' बोली, 'घर की कीमत डेढ़ लाख रुपए। और भी पचास-एक हज़ार का सामान है। फर्नीचर इत्यादि सब बेचकर सब समेत सवा दो लाख से कम न होगा।'

"श्रीमान जी अब सोच में पड़ गए हैं।"

इसके बाद का समाचार टेलीप्रिंटर की मार्फत न्यूयार्क से चटपट आ गया था। एक अपुष्ट समाचार में कहा गया है कि इस समय विदेश-भ्रमणरत राष्ट्रीय 'बड़ी-पर्यवेक्षक-दल' की नेत्री श्रीमती सुनेत्रा चट्टोपाध्याय अपने दल के अन्य-तम सदस्य फिनेन्शल एडवाइज़र श्री चाकलादार के साथ मंगल-परिणय-सूत्र में बँध गई हैं। नवदम्पति अपनी पूर्व-निर्धारित भ्रमण-सूची रद्द न कर आजकल कैनेडा की ओर यात्रा कर रहे हैं।'

परवर्ती घटना भी समाचार-पत्र से उद्धृत करता हूँ—"विरोधी सदस्य श्री हरिदास पाल ने आज संसद में अभि-योग लगाया कि विदेश में श्रीमती सुनेत्रा चट्टोपाध्याय और श्री चाकलादार का विवाह सरकारी नीति के विरुद्ध है। आजकल अपने हनीमून के लिए वे न्यूयॉर्क से अन्यान्य सात नगरों की सैर करके देश को नुकसान क्यों पहुँचा रहे हैं?" विवाह से पहले की घटनाओं को उन्होंने रहस्यजनक

वतलाया।

माननीय विभागीय मन्त्री ने अपने विवरण में वताया कि इस विवाह में कानूनी दृष्टि से कोई वाधा नहीं है। उन्होंने स्वीकार किया कि विवाह के वारे में श्री चाकलादार की ओर से एक अत्यन्त गोपनीय नोट मिला है। राष्ट्रीय हित की दृष्टि से विचार करने पर इस नोट को प्रकाशित करना सम्भव नहीं है, फिर भी मैं इतना कह सकता हूँ कि देश में फॉरेन एक्सचेंज की शोचनीय अवस्था के परिप्रेक्ष्य में विवाह अनिवार्य था। माननीय मन्त्री ने वताया कि उनके ख़याल से यह विवाह श्री चाकलादार के महान देश-प्रेम का परिचायक है।

फ्लेक फाउन्डेशन के श्री व्लॉकहैड के साथ सुनेत्रा देवी के सम्पर्क के सम्वन्ध में एक सदस्य के एक प्रश्न को स्पीकर ने नितान्त व्यक्तिगत कहकर अग्राह्य कर दिया।

माननीय मन्त्री ने और एक प्रश्न के उत्तर में वताया कि खर्च की दृष्टि से भी इस विवाह से सरकार को नुकसान के वदले लाभ ही हुआ है—कारण दो सिंगल रूमों की वजाय होटलों में डवल वैडरूम में रहकर सुनेत्रा देवी और चाकलादार मूल्यवान विदेशी मुद्रा वचा सकेंगे।

डाक से भेजी गई और विलम्व से प्राप्त हुई मौसी को लिखी सुनेत्रा की चिट्ठी संक्षिप्त है—"वहन, शादी किए विना न रह सकी। आज ही शादी हुई है। आज ही सुहागरात है। तुम लोग तो यहाँ हो नहीं, कौन कायदे-कानून के अनुसार इन्तजाम करे। वह सोचते हैं, फॉरेन एक्सचेंज

बचा लिया। मैं सोचती हूँ, मेरी योजना अब सचमुच सार्थक हुई। खुद आडिटर ही जब हाथ में हो तो फिर किसका डर! भले आदमी को खराब समझती थी। अब देखती हूँ कि यह मेरी भूल थी। बाल कटवाकर छोटे कर लिए हैं। आज सूट का ऑर्डर दिया है। उनके साइज़ का रैडीमेड नहीं मिला। वह तुझे नमस्कार कहते हैं। प्यार ले! इति, सुनू।

पुनः—चिट्ठी पढ़ने के बाद तुरन्त फाड़ फेंकना।"

मौसी ने मुझसे कहा—"क्यों, जो कहा था वही हुआ न! जय फॉरेन एक्सचेंज माता की! इस बार तुमने जान बचा ली। एक दिन देखोगे सुनू का 'बड़ी-बोर्ड' तुम्हारे रेलवे बोर्ड से भी बड़ा हो जाएगा। हिस्ट्री में एक दिन तुम्हें सुनू की बात भी लिखनी पड़ेगी।"

मौसी की आखिरी बात इस रचना के लिए अनिवार्य नहीं है। फिर भी लिखता हूँ—"चाकलादार महाशय हनी-मून खत्म करके इस बार देश लौट आएँ, फिर सुनू से कह-कर उन्हें मज़ा चखाऊँगी।"